द्वितीय अध्याय

दुष्यंतकुमार के काव्य का विकास

दुष्यंतकुमार के काव्य का विकास

हिन्दी काव्य के प्रांगण में जब दुष्यंतकुमार का अविर्भाव हुआ तब भारत आज़ाद था । वे सन् १९४९ के लगभग काव्य लिखने लगे । उस समय उनकी उम्र १५-१६ साल की थी । अत: उस समय की स्थिति का परिणाम उनके काव्य पर होना स्वाभाविक था । गांधीजी की हत्या, हिन्दु-मुस्लिमों के बीच के दंगे जैसी घटनाओं की वजह से सारा वातावरण सांप्रदायिक तनाव से घिरा था । उनका अमीट प्रभाव उनकी आरंभिक रचनाओं में नजर आता है ।

प्रारंभिक रचना :

दुष्यंतकुमार की पहली काव्य रचना है "कौन किसी के साथ रहा ।"[१] यह उनकी अप्रकाशित रचना है । इसकी पांडुलिपि उपलब्ध है । प्रस्तुत रचना के जरिए उन्होंने जीवन की असारता का बोध कराने का प्रयास किया है । गांधी हत्या की निर्भत्सना इस रचना का केंद्रिय विषय रहा है ।

प्रथम संकलन :

दुष्यंतकुमार की प्रारंभिक रचनाएँ "पहली पहचान" शीर्षक से संकलित है । संकलन के शीर्षक की सार्थकता इसी में है कि, इन रचनाओं से कवि तथा कवि की प्रतिभा की हम प्रारंभिक पहचान कर सकते है । इसमें संकलित रचनाएँ कवि ने डी.एन्. सिंह "नवादिया", "दुष्यंतकुमार", "परदेसी" जैसे उपनामों से लिखीं थी । इस संकलन में कुल ५६ काव्य रचनाएँ संग्राहित हैं । लेकिन इसके प्रकाशित होने न होने का कुछ पता नहीं लगता । इसके संदर्भ में प्राप्त

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ.हरिचरण शर्मा,"चिंतक",पृ.७३.

सामग्री के आधार पर कहा जा सकता है कि इस संकलन की रचनाओं में कुछ गीत है तथा अन्य फुटकर रचनाएँ ।

दुष्यंतकुमार के काव्य सृजन का प्रारंभ प्रगतिवादी कालखंड में (इ.स. १९३६ से १९४३) हुआ । अत: इस युग का प्रतिबिंब उनकी प्रारंभिक रचनाओं में होना स्वाभाविक है । कुछ रचनाएँ छायावादी प्रवृत्ति को भी लेकर अवतरित हुई हैं । ऐसी रचनाओंमेंहोनेवाला वियोगात्मक शृंगार देखतेही बनता है ।

"पहली पहचान" शीर्षक के अंतर्गत संकलित रचनाओं का मुख्य स्वर "प्रेम" रहा है । इन रचनाओं में प्रतिबिंबित प्रेम वर्णन एक तरफा ही रहा है । उनके इन गीतों में निराशा, विषाद, वियोग का भाव प्लावन हुआ है । इसमें चित्रित प्रेम भौतिक धरातल परही सीमित रहा है । वियोग की बेचैनी मिलन का आकर्षण, सौंदर्य-लालसा, देहाकर्षण का रुझान इस संकलन की विशेषताएँ हैं । कुछ रचनाओं में जीवन की क्षण अंगुरता, मानवीय संबंधों की नि:स्सारता, प्रेम के विभिन्न पक्षों, भावों का वर्णन तथा यथार्थ के तौर पर समकालीन राजनीतिक, सामाजिक स्थितियों का चित्रण किया गयाहै । साथ ही जीवन दर्शन का उद्घाटन भी किया गया है।

इसप्रकार के विषयों को लेकर प्रस्तुत संकलन की ५६ रचनाएँ अवतरित हुई है । मगर इनमें से "दीवार" तथा "ओ सेमल के वृक्ष" जैसी कविताएँ ध्यान आकर्षित करती है । "दीवार" कविता में यथार्थ बोध का वर्णन

मिलता है । इसमें कवि ने मानव के बीच होनेवाले भेदों का वर्णन किया है । "ओ सेमल के वृक्ष" की यह पंक्ति -

"पर मेरे तो इस धरती पर सब अपने हैं ।" [१]

विश्वबंधुत्व का भाव व्यक्त करती है । इसके अलावा कवि ने इस रचना में मानव की स्वार्थपरता पर भी व्यंग्यबाण चलाए हैं ।

इस कृति में संकलित कविताओं के विषय बालबोध रहे हैं । लेकिन उनकी अभिव्यक्ति की शैली जबरदस्त रही है । उन्होंने अपनी इन रचनाओं में स्पर्श बिंब, ध्वनि बिंब के साथ यौन प्रतीक, और उपमानों के जरिए प्रकृति पर मानवीय चेतना का आरोपण सही ढंग से किया है । कवि दुष्यंत-कुमार ने मानवीकरण को भी अपने इन गीतों में स्थान दिया है । इन गीतों को कवि ने मुक्तक छंद तथा गीत छंद में आबध्द किया है । इसतरह "पहली पहचान" शीर्षक से संकलित यह संकलन कवि की काव्यात्मकता की झलक प्रस्तुत करता है ।

यह संकलन गीतों और कविताओं का संकलन है । इन गीतों को पढ़ते समय कवि पर पड़ी महादेवी वर्मा की गीत शैली की अमीट छाप नजर आती है । साथ ही रूमानी गीत शैली का प्रभाव भी नजर आता है ।

दुष्यंतकुमार का यह प्रथम संकलन होने के कारण इसमें भाषा की दृष्टि से कोई गहराई दृष्टिगोचर नहीं होती । साथ ही इसमें कई व्याकरणिक त्रुटियाँ भी हैं । यह सब होते हुए भी कवि दुष्यंतकुमार के बारे में आस्था जगाने के लिए यह संकलन उपयुक्त है ।

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा,"चिंतक",पृ.७६.

कवि दुष्यंतकुमार ने अपनी प्रारंभिक रचनाओं को अध्ययन की दृष्टि से लिखा प्रयुक्त नहीं होता है । फिर भी उन्होंने अपने काल के यथार्थ को तथा मन के प्रेम को इन रचनाओं में समाया हैं । ये रचनाएँ प्रगतिवाद और छायावाद से गुजरती हुई नजर आती है । कवि बाल्यावस्था में होने के कारण उस पर अनेक साहित्यिक, राजनीतिक, सामाजिक प्रभाव पड़े हैं । उन प्रभावों को ग्रहण करके कविता के माध्यम से उन्हें व्यक्त करने का प्रयास किया है । इसमें कवि को सफलता भी मिली है, जिसके कारण कवि दुष्यंत-कुमार को आगे चलकर काव्य रचना लिखने में बल प्राप्त हुआ है ।

सूर्य का स्वागत :

"सूर्य का स्वागत" दुष्यंतकुमार की पहली प्रकाशित रचना है । इसका प्रकाशन समय सन् १९५७ हैं । इस कृति में कुल ४८ कविताएँ हैं । कृति के शीर्षक की तरह साहित्य जगत में भी दुष्यंतकुमार का सूर्य जैसा स्वागत हुआ । इसकी नींव पर ही उन्होंने अपना रचना-महल खड़ा किया । इस कृति में "जभी तो", "कुंठा", "वासना का ज्वार", "दो पोज", "ओ मेरी जिंदगी", "अनुभव दान" और "इनसे मिलिए" जैसी भावप्रधान एवं यथार्थवादी रचनाएँ हैं ।

"सूर्यका स्वागत" कृति में संकलित रचनाओं में विषय वैविध्य है । इन कविताओं के माध्यम से कवि ने समाज का बिखराव, नफरत, टूटन, घुटन, मानव मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, कुंठित इच्छाओं से प्रेरित शृंगारिक सौंदर्य का वर्णन, संघर्ष करने की जरूरत, जीवन की आशा, निराशा, सत्य, असत्य, मानसिक द्वंद्व आदि विषयों का स्पष्टता से विवेचन किया है ।

- -

कवि दुष्यंतकुमार ने समकालीन यथार्थ को देखा-परखा और उसे काव्य के रूप में प्रतिष्ठित किया है । आजकल मनुष्य में स्वार्थ की भावना कार्यरत है । इसकारण वह हर जगह स्वयं को एक स्वार्थी के रूप में प्रकट करता हुआ नजर आता है । ऐसी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण मानव एक दूसरे से नफरत करने लगा है । इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए कवि ने अपनी कविताओं को हथियार बनाया हैं । उनसे बच निकालने, उन्हें खत्म करने की बात कहीं है ।

नफरत तो हर इन्सान करता है । लेकिन इससे हर एक का दिल टूट जाता है । टूटे हुए दिलों में एक प्रकार की मानसिक घुटन पैदा होती है । हर टूटे दिलवाले व्यक्ति के मन पर एक गहरा प्रभाव पड़ता है । ऐसी स्थिति में वह मानसिक दबाव में आता है । इसतरह मानव का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कवि ने "कुंठा" [१] कविता में बड़ी गहनता के साथ किया है ।

चाहे सामाजिक दबाब हो या मानसिक मनुष्य की इच्छाएँ तो अतृप्त रहती है । परंतु मनुष्य की कुछ इच्छाएँ ऐसी है जो कभी तृप्त नहीं होती । ऐसी इच्छाओं की अभिव्यक्ति कवि ने अपनी कुछ रचनाओं में की है । मनुष्य ने अपने विचारों को अगर काबू में नहीं रखा, अपनी इच्छाओं को अगर उफनने नहीं दिया तो कोई अनर्थ नहीं होता । लेकिन आज कल इन्सान स्त्री-सौंदर्य का लालसी बन गया है । वह अपने को स्त्री-सौंदर्य के आगे काबू में नहीं रख पाता । ऐसे स्त्री-सौंदर्य के माया जाल में फँसकर इन्सान अपने रिश्ते, नाते, बंधन सब तोड देता है । लेकिन ऐसे सौंदर्य में क्या होता

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य- डॉ.हरिचरण शर्मा "चिंतक",पृ.७९.

है ? स्त्री की मुस्कान में क्या भाव होते है ? यह बतानेवाली "वासना का ज्वार" की यह पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

"यह तुम्हारी सहज स्वाभाविक सरल मुस्कान ?
कैद इसमें बिल बिलाते अनगिनत तूफान
इसे रोको प्राण !" [१]

कवि युग का दृष्टा होता है । वह अपने युग की सारी घटनाओं को अपनी क्लम के आधार से समाज के सामने पेश करता है । कवि सदैव "संघर्ष ही जीवन और जीवन ही संघर्ष है" सिध्दांत को सामने रखकर अपना जीवन का गुजारा करता रहा है । लेकिन हर एक इन्सान में इतनी ताकद नहीं होती । वह परिस्थिति से घबराकर जीवन से पलायन करना चाहता है । पलायन की इस वृत्ति से उसका जीवन दुखी, दर्दभरा हो जाता है । ऐसे लोगों के लिए कवि संघर्ष करने की बात कहता है, न कि पलायन की । अगर इसतरह इन्सान अपने जीवन में हर संकट, हर मुसीबत का कड़ा विरोध करें, उसे निपटाने का प्रयास करें तो वह जीवन में कभी दुखी नहीं हो सक्ता । इसलिए कवि अपने अनुभवों को प्रकट करता है । इसकारण उसकी "अनुभव दान"[२] कविता ऐसे पलायनवादी लोगों के लिए प्रेरक साबित हो सकती है ।

जीवन की हर मुश्किल का सामना किया जाय तो इन्सान कभी दुखी नहीं होगा । उसमें जिंदगी जीने की इच्छा उत्पन्न होती है । जीवन में निरंतर आशा करना इन्सान के लिए धोखा उत्पन्न कर देता है । उसके जीवन में निराशा के बादल छा जाते है । ऐसी आशा और निराशा का वर्णन भी कवि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है । कवि निराशा

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा "चिंतक", पृ.७९ से उध्दृत.

२. - वही - पृ.८१ से उध्दृत.

एवं दुख को शाश्वत मानते हुए सुख की अनुभूति करानेवाला सत्य मानता है । सुख-दुखों का वर्णन इन शब्दों में कवि ने बड़ी सहजता से किया है -

"दुख किसी चिड़िया के अभी जन्मे बच्चे-सा,
किंतु सुख, तमंचे की गोली जैसा
मुझको लगा है ।" [१]

लेकिन इन्सान तो अपना जीवन आशाओंपर बिताता है । दुखपूर्ण जीवन वह कभी जीना नहीं चाहता । ऐसे लोगों के मन में आशावादी विचारों को भर देने का काम कवि करता है । इनके अलावा कवि दुष्यंत-कुमार ने एक-दो जगह यौवन की रूमानी आस्था को प्रकट किया है । आज कल हर भारतीय पाश्चात्य बातों से प्रभावित रहा है । ऐसे लोगों पर अपने व्यंग्य बाण छोड़ते हुए कवि ने "इनसे मिलिए"[२] कविता के माध्यम से युवक - युवतियों का नख-शिख वर्णन किया है । पाश्चात्य सभ्यता से कवि तो निराश है । निराशा को हटाकर कवि अपने जीवन को आशावादी बनाता हुआ दिखाई देता है । इसतरह का आशावाद कवि अपनी इस कृति की अंतिम रचना "सूर्य का स्वागत" कविता से प्रकट करता हुआ नजर आता है । वह कहता है -

"पर तुम आये हो-स्वागत है,
स्वागत ! .... घर की इन काली दीवारों पर
और कहाँ ! " [३]

और इन्सान की बेचैनी को हटाकर उसके मन में आशा का किरण फैलाकर उसका जीवन सुखमय करने के लिए, उसमें उत्साह भर देने का महत्वपूर्ण कार्य करता है ।

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य -डॉ.हरिचरण शर्मा,"चिंतक",पृ.८१ से उध्दृत.
२. - वही - पृ. ८२ से उध्दृत.
३. - वही - पृ. ८२ से उध्दृत.

इस तरह कवि दुष्यंतकुमार ने लिखी इस कृति का ढाँचा रहा है । इस कृति में दुष्यंतकुमार ने अपने पूर्ववर्ती काव्य संकलन के विषयों को युवावस्था में लाने का प्रयास किया है । पहले संकलन के विषय में उनका ज्यादातर व्यक्तिगत दृष्टिकोण था । लेकिन "सूर्य का स्वागत" कृति में अपने व्यक्तिगत विषयों, समस्याओं को ही समष्टि के विषय तथा समस्याओं के रूप में प्रकट किया है । उनका "पहली पहचान" काव्य संकलन कुछ ही सामाजिक विषयों को तथा अनेक व्यक्तिगत विषयों को लेकर उपस्थित हुआ है । लेकिन "सूर्य का स्वागत" कृति में उन्होंने अपना कदम सामाजिकता की ओर बढ़ाया है । इसके लिए अनुकूल ऐसी उक्ति डॉ. हरिचरण शर्मा ने कहीं है, "उनका व्यष्टिसमष्ठि के समक्ष समर्पित हो गया है ।" जो "दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य" कृति की प्रस्तावना में स्पष्ट झलकती है । उन्होंने तो"पहली पहचान" कृति में स्वयं के प्रेमी दर्द को स्पष्ट किया है । जो उनकी आयु की स्वाभाविकता से हुआ है । कालांतर से अपने दिमाग की युवावस्था को अपनाते हुए उन्होंने "सूर्य का स्वागत" कृति में सामाजिक तथा आम आदमी के दर्द को स्पष्ट किया है । इससे स्पष्ट होता है कि, उनका अंतरिक कवि विकसित हुआ है । विषयों के बारे में उनकी यह विकसितावस्था ही कहलायी जा सकती है ।

कवि दुष्यंतकुमार द्वारा रचित कविताओं के इन विषयों की विकसित अवस्था के साथ-साथ उनका काव्यगत व्याकरणिक विस्तार भी हुआ-सा नजर आता है । "पहली पहचान" काव्य संकलन कवि मन की बाल्यावस्था का होने के कारण उसमें काव्य के कुछ ही पहलू झलके हैं । लेकिन कवि दुष्यंतकुमार की कलम ने "सूर्य का स्वागत" कृति की रचना करते समय नया मोड़ लिया है ।

- -

"सूर्य का स्वागत" कृति जिसतरह विषय-वैविध्य लेकर उपस्थित हुई है । काव्य के अनेक पहलुओं को भी इस कृति में बड़ी मात्रा में देखा जा सकता है । इसमें कवि ने पौराणिक बिंबों के जरिए अपनी बातों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है । जिसके प्रमाण स्वरूप कुंठित भावनाओं को प्रस्तुत करती हुई "दिग्विजय का अश्व" कविता की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

"कृष्ण अर्जुन इधर आए,
हम उन्हें आने न देंगे,
सत्यान्वेषी की सुनों कृष्ण हूँ मैं ।" [१]

इसतरह के सर्वोत्कृष्ट पौराणिक बिंबों की झलक इन कविताओं में मिलती है ।

कवि दुष्यंतकुमार ने "सूर्य का स्वागत" कृति में पौराणिकता को महत्व दिया है । उसके आधार पर उन्होंने अपनी बातों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है । इसके लिए उन्होंने प्रतिकों के क्षेत्र में भी "पौराणिक प्रतीक" का आयोजन किया है । "कुंठा" कविता में कुंती को कुंठित मनोवृत्ति का प्रतीक प्रस्तुत करते हुए कहा है -

"गर्भवती है
मेरी कुंठा क्वारी कुंती ।" [२]

सही प्रस्तुत होता है । कुछ रचनाओं में क्लात्मक प्रतिकों को भी अपनाया गया है । कविता अपनी क्लात्मकता के कारण ही सुंदर एवं अर्थपूर्ण होती है । इसलिए हर एक कवि क्लात्मकता को प्रमुखता देने की

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा, "चिंतक", पृ. १३३ से उध्दृत.

२. -"वही - पृ. १३६ से उध्दृत.

कोशिश करता है । उसी तरह कवि दुष्यंतकुमार ने भी "दीवार" कविता में कलात्मक पतिकों के माध्यम से आज की सामाजिक समस्याओं और बाधाओं को परंपराओं के प्रतीक रूप में चूना है ।

"दीवार भला कब तक रह पायेगी सुरक्षित
यह पानी नभ से नहीं धरा से आता है ।" [१]

प्रतीक के क्षेत्र में जीवन के अनेक प्रतीक आते है । अत: कवि ने "जनजीवन से भी कुछ प्रतिकों को चुनकर उनके माध्यमसे अपनी बातें स्पष्ट की हैं । यहाँ कवि ने पतंग को निराशा पूर्ण जिंदगी का प्रतीक चुन्कर अपनी अभिव्यक्ति को सहज और स्वाभाविक बनाया है । जो दृष्टव्य है -

"कटी हुई पतंगों से हम सब
छत की मुंडेरों पर पड़े है ।" [२]

कवि ने तो संसार की मामूली-सी मामूली बातों से भी अपना काम चलाया है । उनसे अपेक्षित अर्थ प्रस्तुत किया है । आज का युग तो वैज्ञानिक युग रहा है । इस जमाने में हर एक इन्सान वैज्ञानिक साधनों को अपने जीवन में इस्तेमाल करता आ रहा है । कवि दुष्यंतकुमार ने भी "दिग्विजय का अश्व" कविता में इस तरह के वैज्ञानिक प्रतिकों को चुना है । "अश्व" को मशीन के प्रतीक रूप सार्थक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

"पहली पहचान" काव्य संकलन इन बातों में कुछ कमी महसूस करता था । उसे काव्य संकलन का दोष नहीं माना जा सकता । यह तो कवि की काव्य कला की कमी जरुर मानी जा सकती है । फिर भी कवि ने अपनी

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य-डॉ.हरिचरण शर्मा "चिंतक", पृ. १४१, से उध्दृत.
२. - वही - पृ. १४१, से उध्दृत.

"सूर्य का स्वागत" कृति में प्रतिकों की कमी को दूर कराकर अपनी क्लात्मकता को विकसित रूप में प्रस्तुत किया है । यह उनके काव्य विकास का एक बिंदु माना जा सकता है ।

काव्य में प्रतिकों के बाद "अप्रस्तुत विधान" का क्षेत्र आता है । अपने अनुठें प्रयोगों द्वारा अपनी कविताओं में एक प्रकार की सजीवता भरने का काम कवि ने किया है । दुष्यंतकुमार भाषा के धनी थे ऐसा कहा गया है । इसका प्रमाण उन्होंने "प्रकृतिक जन्य अप्रस्तुत" के क्षेत्र में प्रस्तुत किया है -

"जंगली फूल-सी सुकुमार औ निष्पाप
मेरी आत्मा पर बोझ बढ़ता जा रहा है। प्राण !" [१]

इन पंक्तियों में कवि ने "जंगली फूल" को "आत्मा" उपमेय के लिए चुना है । यह उपमेय आत्मा के रूप और गुण दोनों के लिए प्रयुक्त हुआ है । इसके अलावा कवि ने इस कृति में "पौराणिक अप्रस्तुत" को भी स्थान दिया है । साथ ही भाषागत अप्रस्तुत के एक-दो चरणों को भी इस कृति में अपनाया गया है । इसमें से "मूर्त के लिए अमूर्त", "अमूर्त के लिए अमूर्त", और "मूर्त के लिए मूर्त" अप्रस्तुत का प्रयोग हुआ है । "अमूर्त के लिए मूर्त" का यह उदाहरण दृष्टव्य है -

"दुख किसी चिड़िया के अभी जन्में बच्चेसा" [२]

× × × ×

"एक चिड़िया की तरह पंख फड़फड़ाता फिरता था अतीत" [३]

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य-डॉ. हरिचरण शर्मा "चिंतक", पृ.१४३ से उध्दृत.
२. - वही - पृ.१४६ से उध्दृत.
३. - वही - पृ.१४६ से उध्दृत.

इन पंक्तियों में अमूर्त दुख के लिए "चिड़िया" के बच्चे को तथा अतीत के लिए भी "चिड़िया" के मूर्त रूप को प्रस्तुत किया गया है । ऐसे उपमानों की अधिकता इस संकलन में पायी जाती है । इसतरह के उपमानों की कमी तो "पहली पहचान" संकलन में महसूस की जाती है । इस कमी को कवि ने "सूर्य का स्वागत" कृति के माध्यम से दूर किया है । इसे भी उनके काव्य विकास का एक और चरण माना जा सकता है ।

"छंद" तो कविता का प्राण माना जाता है । दुष्यंतकुमार ने "पहली पहचान" शीर्षक में संकलित रचनाओं के लिए "मुक्तक छंद" और "गीत छंद" को ही अपनाया था । वह तो उस कृति के अनुकूल ही लगता है । इसतरह अपने छंदात्मक विकास को आगे बढ़ाते हुए दुष्यंतकुमार ने "सूर्य का स्वागत" कृति में "त्रिपदी" नामक नये छंद को अपनाया है । जिसके प्रमाण स्वरूप यह पंक्तियाँ है -

"तुमको अचरज है मैं जीवित हूँ ।
उनको अचरत है मैं जीवित हूँ ।
मुझको अचरज है मैं जीवित हूँ ।" [१]

यह पंक्तियाँ एक विशिष्ट भाव को तीव्रता के साथ व्यक्त करती है । जो "कैद परिंदे का बयान" कविता से ली गयी है । "त्रिपदी" की विशेषता यही है कि इसकी प्रथम और तृतीय पंक्ति में २०-२० मात्राएँ तथा द्वितीय पंक्ति में १९ मात्राएँ होती है । कहीं कहीं पर कवि ने "मुक्तक छंद" को भी अपनाया है । अत: "त्रिपदी" छंद का प्रयोग हिन्दी साहित्य के

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरचरण शर्मा "चिंतक", पृ. १५५ से उद्धृत.

छंद क्षेत्र में तो विकास का पहलू कहा जा सकता है । साथ ही दुष्यंतकुमार कीकाव्य कला का विकासशील रूप माना जा सकता है ।

भाषा तो विचारों का वहन करती है । कवि दुष्यंतकुमार ने अपने पहले संकलन में भाषा की कोई खासियत नहीं अपनायी है । लेकिन "सूर्य का स्वागत" कृति भाषागत विशेषताओं के साथ लिखी गयी है । कवि ने अपनी अभिव्यक्ति को सहज, सरल, बोधगम्य और भावपूर्ण बनाने के लिए उपमानयुक्त भाषा का उपयोग किया है । इसीकारण उनकी भावाभिव्यक्ति में गरिमा आयी है । उन्होंने चित्रात्मक भाषा का उपयोग अपने अमूर्त भावों को विशेष रूप में प्रस्तुत करने के लिए किया है । ऐसी सरल और सहज बोधगम्य उपमानों से युक्त भाषा भावाभिव्यक्ति में सफल रही है । जो कवि की काव्य भाषा के विकास में अपना योगदान प्रस्तुत करती है ।

हर चीज की कुछ अच्छाइयाँ और बुराइयाँ भी होती है । उसीतरह कवि दुष्यंतकुमार के इस काव्य संकलन में भी कुछ त्रुटियाँ है । जिन्हें कवि को भावावेशता का कारण माना जा सकता है । जो व्याकरणिक दृष्टि से दोषी ठहराई जाती है । उन्होंने अपनी काव्य भाषा में अनेक शब्द गलत रूप में अपनाये हैं । इसकारण उनमें लिंगभेद, वचनभेद, जैसे दोष उत्पन्न हुए है । भाषागत कमजोरी प्रस्तुत करते हुए कहीं - कहीं वाक्यों को अधूरा छोड़ा है, कहीं अधूरे वाक्यों से कविता का आरंभ किया है । कवि ने यह जान बुझाकर किया है । जिसके उपयोग से उन्होंने अपनी रचनाओं में तीव्रानुभूति लाने का प्रयास किया है । इन दोषों के होते हुए भी "सूर्य का स्वागत" कृति "पहली पहचान" संकलन से कहीं ज्यादा विकसित रूप में उपस्थित हुई है ।

- -

अत: स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि, कवि दुष्यंतकुमार ने अपनी काव्य-कला में विषयगत विकास के साथ-साथ व्याकरणिक और भाषागत सभी दृष्टि से पूर्ववर्ती संकलन की अपेक्षा "सूर्य का स्वागत" कृति को विकसित बनाया है । अपने भावों को व्यक्त करने में वे सफल रहे है । इस संकलन में कई नव्यताओं को भी लिया गया है । कुछ दोष भी आ गये है । फिर भी दुष्यंतकुमार की यह कृति उनके काव्य विकास के साथ-साथ हिन्दी साहित्य के विकास में भी अपना योगदान प्रस्तुत करती है ।

आवाजों के घेरे :

दुष्यंतकुमार के कविने कभी चैन की सांस नहीं ली । उन्होंने एक के बाद एक अनेक कृतियाँ लिखीं । इसमें से "आवाजों के घेरे" नामक यह संकलन है । इसमें ५१ रचनाएँ संकलित है । इसका प्रकाशन वर्ष सन् १९६३ हैं । इसमें जो रचनाएँ संकलित हैं, उनमें से प्रमुख हैं - "आवाजों के घेरे", "एक साध्दमर्य", "दृष्टांत", "विवेकहीन", "घुमने-अकेले", "प्रयाग की शाम", "एक मित्र के नाम", और "गौतम बुध्द" आदि ।

कवि ने इन कविता ओं के माध्यम से अनेक विषयों को विवेचित किया है । इसमें विषय वैविध्य लाया है । इस संकलन की प्रमुख कविता "आवाजों के घेरे" में कवि ने सहनिशक्ति की सीमा के कारण दम घुटती हुई स्थिति का वर्णन किया है -

"या फिर मेरी आँखों पर पट्टी बाँधों,
मेरे अधरों पर जड़ दो ताले,
कानों के परदे कर दो नष्ट

- -

मेरी भावुकता को कस-बेबस कर दो... वरना फिर ।" [१]

कवि ने अपनी कृति की शुरुवात ही बड़ी सजगता से की है । जीवन का आशावाद, मानव मन की करुणा, मानव जीवन से संबंधीत कई प्रश्न और कुछ प्रश्नों का हल ढूँढने का प्रयास, सामाजिक विषमता, बेईमानी, साम्यवादी और समाजवादी विचारधाराओं पर व्यंग्यात्मक विवेचन, दमित वासनाओं का विश्लेषण, निष्काम प्रेम का वर्णन तथा बुध्द का करुणावाद आदि विषयों को इस कृति में स्थान मिला है ।

एक तरफ कवि ने जीवन की निराशा को अभिव्यक्त किया है, तो दूसरी ओर जीवन की आशा को स्पष्ट किया है । लेकिन जीवन में हर इन्सान को हर समय सुख मिलेगा ऐसा नहीं । उसे कुछ न कुछ समय के लिए दुख एवं करुणा का एहसास होता ही है । ऐसी स्थिति में इन्सान को हिम्मत से काम लेना चाहिए । अपने जीवन के लिए एक आस्था जगानी चाहिए । अपने जीवन को खुशी से बिताने का प्रयास करना चाहिए । इसलिए उसे अपने ऊपर होनेवाले हर अन्याय, अत्याचार का मुकाबला करना चाहिए । उसे यह विश्वास करना चाहिए कि, वह अन्याय, अत्याचार की बर्फिली दीवार को पिघला देगा, नष्ट कर देगा । इस तरह का विश्वास मनुष्य मन में जगानेवाली कवि की यह काव्य पंक्तियाँ है -

"मुझे मालूम है
दीवारों को
मेरी आँच जा छुएगी कभी
और बर्फ पिघलेगी
पिघलेगी ।" [२]

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा "चिंतक", पृ. ८४ से उध्दृत.

२. - वही - पृ. ८६ से उध्दृत.

कुछ रचनाओं में गांधीवादी प्रभाव से सत्य और अहिंसा, प्रजातांत्रिक समस्याओं, साम्यवादी और समाजवादी विचारधाराओं पर व्यंग्य किया है ।

"आवाजों के घेरे" कृति अनेक विषयों की कृति रही है । दुष्यंतकुमार ने "पहली पहचान" कृति में नि:स्वार्थी प्रेम का वर्णन किया था । पूर्ववर्ती "सूय का स्वागत" कृति में सौंदर्य लालसा तथा देहाकर्षण के सुप्त भावों का वर्णन किया था । लेकिन "आवाजों के घेरे" कृति में उन्होंने आज के समाज में फैली वासनाओं का वर्णन किया है । कुछ रचनाओं में इन्सान की दमित वासनाओं का वर्णन किया है । इसका प्रमाण "कौन-सा पथ कठिन" कविता की यह पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

"तुम्हारा चुम्बन
अभी भी जल रहा है भाल पर
दीपक सरीखा ।" [१]

उन्होंने फ्रायड के काम सिध्दांतानुसार विपरित लिंगी आकर्षण तथा निष्काम प्रेम का वर्णन भी कुछ कविताओं में किया है ।

दुनिया तो परिवर्तनशील है । जो भी निर्माण होता है, उसका नाश तो होता ही है । कोई भी चीज़ अमर नहीं है । वह नश्वर है, क्षणभंगुर है । फिर भी इन्सान उन चीजों के पीछे सदैव भाग-दौड़ करता रहता है । अपने को कभी तृप्त महसूस नहीं करता । इसकारण उसे जीवन में कभी सुख का एहसास नहीं होता और दुख उसका पीछा कभी नहीं छोड़ता। फिर भी वह नश्वर, क्षणभंगुर चीज़ों पर गर्व करता है, विश्वास करता है ।

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा, "चिंतक" पृ. ८७ से उध्दृत.

ऐसे विश्वासपूर्ण वक्तव्यों को कवि ने स्पष्ट किया है । "एक मित्र के नाम" कविता की पंक्तियां इस संदर्भ में उल्लेखनीय है -

"एक दाँव हारे हैं
एक जीत जायेंगे
जीवन के दिन हैं
अभी बीत जायेंगे ।" [२]

कवि तो समाज का एक हिस्सा होता है । समाज की अनेक घटनाएँ, और समाज में प्रचलित वादों का प्रभाव उसपर पड़ना स्वाभाविक है । इस-तरह दुष्यंतकुमार पर भी गांधीवाद, समाजवाद के साथ-साथ बौध्दों के करुणावाद का भी प्रभाव नजर आता है । इसी वजह से उन्होंने अपनी कविताओं में बौध्दों के करुणावाद को भी विवेचित किया है । करुणावाद की महता बताते हुए उन्होंने दुख को असीम कहा है । लेकिन आम-आदमी इस दुख को कम करने के लिए भगवान के पास जाता है । अपने दुख को कम करने के लिए भगवान के सामने सिर पटकने वालों पर व्यंग्यबाण चलाते हुए कवि ने कहा है -

"दुख मूल है आज भी जिसकी
मात्रा की कुछ शर्त नहीं है,
संघ धम्म की शरण
लाख सिर पटके कोई अर्थ नहीं है ।"[२]

दूख तो भगवान से दी हुई कोई चीज नहीं है । यह तो सामाजिक विद्रुपता के कारण होता है । यह मानव द्वारा बनायी गयी चीज़ है ।

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा "चिंतक", पृ.८७ से उध्दृत.

२. - वही - पृ.८५ से उध्दृत.

12705
A

अगर इसका मूल ढूंढकर उसे समूल नष्ट करने का प्रयास किया जाय तो समाज में किसी को भी दुख महसूस नहीं होगा । कवि इन बातों को समझाने की कोशिश अपनी रचनाओं के माध्यम कर रहा है । कवि कहता है -

"मित्रों ,।
मुझसे हमदर्दी है तो
मेरे बेचैनी का कारण समझो बुझो
आओ ।" १

इसतरह "आवाजों के घेरे" कृति में अन्याय के विरुद्ध विद्रोह, बेचैनी के कारण निर्माण हुए मध्यमवर्गीय लोगों के अभावों और भावों की अभिव्यक्ति, उनकी पीड़ा, सामान्य लोगों के जीवन जीने की आशा-आकांक्षाओं को कविने बड़ी काव्य-कुशलता से स्पष्ट किया है । बौद्ध के करुणावाद पर सटिक व्यंग्य किये है । साथ ही इन में परिवर्तन लाने के लिए किये जाने-वाले प्रयत्नों को भी विवेचित किया है ।

"पहली पहचान" में दुष्यंतकुमार ने कुछ सामाजिक, राजनीतिक घटनाएँ, व्यक्तिगत प्रेम भाव, उससे उत्पन्न निराशा, वियोग आदि विषयों को प्रस्तुत किया है । "सूर्य का स्वागत" कृति में वे समष्टि की ओर बढ़े है । उसमें उन्होंने समाज, सामान्य आदमी के दुख, दर्द, निराशा, बेचैनी, घुटन आदि को विवेचित किया है । कालांतर से लिखी "आवाजों के घेरे" कृति में उन्होंने अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह, सहनशक्ति की सीमा,

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा,
"चिंतक", पृ. ६८ से उद्धृत.

गांधीवाद से प्रभावित सत्य और अहिंसा पर आधारित सिध्दांतों का विवेचन, बौध्दों का करुणावाद, और दमित वासनाओं का विवेचन किया है । यह संकलन विषयों की दृष्टि से पूर्ववर्ती दोनों काव्य संकलनों की अपेक्षा यह संकलन विषय एवं आशय की दृष्टि से विकसित नजर आता है । इसे मानव जीवन, समाज, राजनीति, आदि से सभी प्रभावों को ग्रहण करके लिखा है ।

दुष्यंतकुमार के हर एक काव्य संकलन की कोई-न-कोई विशेषता रही है । यह संकलन शिल्प की दृष्टि से बड़ा ही सशक्त है । "पहली पहचान" प्रारंभिक संकलन होने के कारण उसमें शिल्प की ओर अधिक ध्यान नहीं रहा है । "सूर्य का स्वागत" कृति कुछ विकसित रूप में अवतरित हुई है । लेकिन "आवाजों के घेरे" कृति में पहले तथा दूसरे संकलन में समाये शिल्प पहलुओं के अलावा अन्य कुछ पहलुओं को भी अपनाया है, और अपनी काव्याभिव्यक्ति में मजबूती लाने का प्रयास किया है ।

इस कृति में कवि ने गंध बिंब, गतिबिंब, प्रकृति बिंब, पौराणिक बिंब, और ऐतिहासिक बिंब को अपनाया है । इसमें के कोई भी बिंब पहले संकलन में न के बराबर है । "सूर्य का स्वागत" में पौराणिक बिंब को पाया गया है । "आवाजों के घेरे" कृति में एक और बिंब की अवतरणा हुई है । जो पूर्ववर्ती काव्य संकलनों में नहीं दिखाई देता । वह है ऐतिहासिक बिंब । ऐतिहासिक बिंब से कवि ने महात्मा गांधी की मृत्यु से जुड़ी घटना को प्रत्यक्ष रूप में खड़ा करने का प्रयास किया है -

- -

"चाहे इस प्रार्थना सभा में
तुम सब मुझपर गोलियाँ चलाओ
मैं मर जाऊँगा
लेकिन मैं कल फिर जन्म लूँगा ।" [१]

बिंबों के बाद प्रतिकों का स्थान आता है । अन्य व्याकरणिक पहलुओं की तरह प्रतिकों को भी अनन्य साधारण महत्व है । कवि को जो बात कहनी होती है, वह सीधे तरिके से न करता हुआ वस्तु को इस वस्तु के प्रतीक स्वरूप मानकर उसका वर्णन करता है । कवि दुष्यंत ने भी इस पध्दति को इस संकलन की रचनाओं में भाव विवेचित करने के लिए अपनाया है । इसके प्रमाण स्वरूप "विवेकहीन" कविता की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

"जल में आ गया ज्वार
सागर आंदोलित हो उठा मित्र,
नाव को किनारे पर कर लंगर डाल दो ।" [२]

इन पंक्तियों में जल को मन का प्रतीक, ज्वार को मन के संघर्ष का प्रतीक, सागर को हृदय का प्रतीक, नाँव को जीवन का प्रतीक, और किनारा विवेक का प्रतीक माना गया है ।

इन प्रतिकों के अलावा कवि ने पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से भी अपनी रचनाओं में गहनता लाने का प्रयास किया है । इसप्रकार कवि दुष्यंत-कुमार अपनी काव्य विकास की यात्रा पर कदम बढ़ाता हुआ नजर आता है । कवि ने अपने पहले दो काव्य संग्रहों में इस तरह के प्रतीकों अपनाया नहीं है ।

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा, "चिंतक", पृ. १३५ से उध्दृत.
२. - वही - पृ. १३७ से उध्दृत.

संकलन के विषयानुकूल यह प्रतीक होने के साथ ही कवि का काव्यात्मक विकास प्रस्तुत करने में भी अपना योगदान देते हैं ।

काव्य में अप्रस्तुत विधान का भी महत्व कम नहीं है । इसके माध्यम से कवि अपनी चमत्काराभिव्यक्ति को प्रस्तुत करता है । चमत्काराभिव्यक्ति के लिए दुष्यंतकुमार ने इसे अपनाया है । पूर्ववर्ती संकलनों की अपेक्षा "आवाजों के घेरे" कृति में एक अनुठे अप्रस्तुत विधान को दुष्यंतकुमारने अपनाया जो "विशेषण विपर्यय" अप्रस्तुत विधान के नाम से पहचाना जाता है । इसका प्रमाण देती हुई "गांधीजी के जन्म दिन पर" कविता की यह पंक्तियाँ -

"मैंने वहाँ भी
ज्योति की मसाल प्राप्त करने के यत्न किये ।" १

"विशेषण विपर्यय" अलंकारिक अप्रस्तुत विधान के क्षेत्र में आता है । जिसका प्रयोग कवि ने पहले कभी नहीं किया है । इसे कवि की काव्यकला का विकास कहा जा सकता है ।

इसतरह कवि अपनी काव्य कला को विस्तृत बनाता रहा । इसमें से छंद को भी छुटकारा नहीं मिला । पूर्ववर्ती संकलन "सूर्य का स्वागत" कृति में कवि ने "त्रिपदी" नामक छंद को अपनाकर हिन्दी पाठकों को एक नये छंद से परिचित कराया है । उसीतरह "आवाजों के घेरे" कृति में छंद के अनेक प्रकारों को अपनाया है । इनमें मुख्यत: "लय की विविधतावाले छंद" तथा "लयहीन मुक्तक छंद" है । इसमें से लयकी विविधतावाले मुक्त छंद में तो अर्थ

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा, "चिंतक", पृ. १४९ से उध्दृत.

लय विद्यमान रहता है, परंतु शब्द लय का अभाव रहता है । इस बात का प्रमाण "हम" कविता की यह पंक्तियाँ है -

"हम उपन्यासिक अधरे कथा-नायक
विश्व के साहित्य में
आलोचकों की कृपा के पात्र होकर रह गये ।" [१]

यह स्थिति तो एक विकसित कवि की स्थिति कहीं जा सकती है । कवि ने अपने इस संकलन में काव्यात्मक विकास के लिए आवश्यक कदम उठाए है । जो काव्य के हर एक क्षेत्र में नजर आते है ।

"आवाजों के घेरे" काव्य संग्रह तो एक अलग ढंग का काव्य संग्रह है, जिसमें विविध विषय तथा विविध काव्यांग नजर आते है । इसतरह कवि दुष्यंतकुमार के काव्यात्मक विकास में कवि की काव्यभाषा भी अपना योगदान प्रस्तुत करती हुई नजर आती है । इस कृति की काव्य भाषा में उपमान योजना श्रेष्ठता की स्थिति में प्रयुक्त हुई है जिसका प्रत्यय कवि ने "एक आशीर्वाद" कविता में सच्चाई के लिए चाँद-तारों की उपमा द्वारा दिया है । साथ ही उन्होंने जो भोगा है, वही लिखा है । इस बात का प्रत्यय भी इस संकलन में आता है । जिसमें कवि ने अपनी दर्द पूर्ण भाषा से अपने दिल की संवेदना प्रस्तुत की है । जिसका प्रमाण ये पंक्तियाँ है -

"हृदय जिसने सहा दुख
सहना सिखाया
और अभिव्यक्ति की
नयी काव्यशैली को जन्म दिया ।" [२]

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा, "चिंतक", पृ. १५१ से उध्दृत.
२. - वही - पृ. १५९ से उध्दृत.

यह तो कवि की काव्य कला विकास के संकेत है । लेकिन पूर्ववर्ती संकलनों की तरह इस संकलन में कुछ खामियाँ नजर आती है । इसके संकलन के अनेक वाक्यों में अर्थ व्यंजना की असमर्थता स्पष्ट झलकती है । इस बात को साबित करते हुए कवि ने कहीं-कहीं वाक्यों को अधूरा छोड़ा है । कहीं अपने भावों को कोष्टकों में दिया है । तो कहीं अलग-अलग विराम चिन्हों को अपनाकर काम चलाया है । इसे कवि की शब्द भंडार की त्रुटी कही जा सकती है ।

अत: यह कहा जा सकता है कि, कहीं-कहीं तो कवि ने अपने को भावावेश में बहा दिया है । तो कहीं अपने भावों को सही रूप में, सही ढंग से प्रस्तुत किया है । अपने विषय विवेचन एवं काव्य कला विवेचन में कोई कमी नहीं रखी है । साथ ही छंद तथा अलंकार के क्षेत्र में कुछ नव्यताओं को अपनाकर कविने अपना काव्यात्मक विकास स्पष्ट किया है । इसकारण यह संकलन कुछ कमियों के होते हुए भी दुष्यंतकुमार के काव्य-विकास में अपना ठोस योगदान प्रस्तुत करता है ।

जलते हुए वन का वसंत :

"जलते हुए वन का वसंत" कवि दुष्यंतकुमार की तीसरी प्रकाशित रचना है । इस रचना में कवि ने ४५ रचनाओं को संकलित किया है । लेकिन इस रचना का प्रकाशन समय उपलब्ध नहीं हो सका है । इस कृति की एक विशेषता रही है कि, इसके आरंभ में भूमिका लिखी है । इसे कवि ने तीन खडो में विभाजित किया है, जिसमें कवि ने उन खंडों के नामों के अनुसार उसमें कविताओं को अंकित किया है । अत: दुष्यंतकुमार के काव्य विकास में यह चरण अपना योगदान प्रस्तुत करता है ।

- -

इस कृति को जिन तीन विभागों में विभाजित किया है, वह है - "इतिहासबोध", "देशप्रेम", और "चक्रवात" । इन तीन खंडो के अलावा एक और रचना भी इस कृति की शुरु में मिलती है, उसका शीर्षक "अवगाहन" है । अत: इस रचना की खंडों के अनुसार प्रमुख कविताएँ इसप्रकार है । पहले "इतिहास बोध" खंड की रचनाएँ - योग संयोग, यात्रानुभूति, उपक्रम, परवर्ती प्रभाव, अस्तिबोध आदि ।

कवि दुष्यंतकुमार ने जहाँ अपने काव्य के लिए समाज को विषय बनाया है, वहाँ अपनी वैयक्तिकता को भी काव्य का विषय बना लिया है । इसका अनुभव "जलते हुए वन का वसंत" काव्य संकलन से आता है । इससे कवि की व्यक्तिगत चिंतनशीलता का परिचय पाठकों को होता है । यह भी कवि के कवित्व तथा विषयात्मक विकास का एक पहलू माना जा सकता है । जिसमें उन्होंने अपने अंदर की बातों को समाज में देखकर आम आदमी के रूप में अभिव्यक्त की है ।

इस संकलन के "इतिहास बोध" खंड में ज्यादातर अपने अतीत तथा अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों, रुढ़ियों आदि में आये परिवर्तन, इसके लिए जिम्मेदार परिस्थितिसों का आलेख प्रस्तुत किया है । इस खंड की पहली कविता "योग संयोग" में परिस्थितियों के घात-प्रतिघातों के कारण आदमी की बदलती हुई स्थिति का वर्णन मिलता है । इस कविता के माध्यम से कवि ने अपने अतीत को उजागर किया है ।

"उपक्रम" कविता में कवि ने अपने जन्म को एक दुर्घअना के रूप में प्रस्तुत किया है । अपने जीवन को एक विवशता के रूप में प्रस्तुत किया है ।

- -

इन भावों को उजागर करनेवाली यह पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

"मेरा जन्म
एक नैसर्गिक विवशता थी :
दुर्घटना :
आत्म हत्यारी स्थितियों का समवाय ।" [१]

इन पंक्तियों में अस्तित्ववादी विचारधारा की झलक मिलती है । साथ ही इस कविता में जीवन के निराशावादी चित्र खिंचे गये है । मानव जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है ।

कवि दुष्यंतकुमार ने "एक सफर पर" रचना में रेल यात्रा में होनेवाली मानवता की हत्या की ओर संकेत करते हुए आज के समाज में एक-दूसरे के प्रति बढ़ते हुए संदेहों, शंकाओं का, एक दूसरे से किये जानेवाले शत्रूवत व्यवहारों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है । "सुबह समाचार पत्र के समय" कविता में कवि ने युध्द, विद्रोह, अन्न संकट, सत्ता परिवर्तन जैसी समस्याओं की ओर अपनी उँगली उठाई है । इसतरह के सत्य को प्रस्तुत करती हुई यह काव्य पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

"सच है
हमारे लिए भी कल्पनाओं के आश्रम खुले हैं,
चौंकाती नहीं हैं दुर्घटनाएँ,
कितना स्वीकार्य और सहज हो गया है परिवेश,
कि सत्य
चाहे नंगा होकर आये, दिखता नहीं है।" [२]

---

१. जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. १०
२. - वही - पृ. २३

इस तरह यह घटनाएँ रोज घटती है, मगर इनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता । इन्सान को इन की आदत ही हो गयी है ।" इसतरह का यथार्थ चित्रण कवि द्वारा किया गया है । "आत्मालाप" कविता में कवि ने विशुध्द व्यक्तिवादिता को अपनाते हुए अधिकारों के बदलते हुए व्यवहारों की निंदा है । साथ ही प्रशासनिक यथार्थ एवं कर्तव्य से परावृत्त आदमी की ओर भी संकेत किया है ।

इस खंड में अनेक विषयों को स्थान मिला है । "अस्तिबोध" कविता में अपने स्वार्थ के लिए इन्सान द्वारा किये जानेवाले नीच व्यवहारों का पर्दाफाश किया है । इसका विवेचन बड़ी सुंदरता तथा गहनता के साथ किया है । स्वार्थ के लिए इन्सान व्यवहार और सिध्दांत को किस तरह पृथक कर सकता है इसका विवेचन सजगता से किया गया है । ऐसी स्थिति में भी इन्सान जीने की तमन्ना लिए जी रहा है । इसलिए कवि कहता है -

"मैं कोई कायर आदमी नहीं हूँ, जीने में रस लेता हूँ ।
लेकिन इस जीवन से डरता हूँ
जिसको जीता हूँ ।" [१]

इसतरह का जीवन बिताते हुए भी कवि इस खंड की अंतिम रचना में अपने जीवन को बाजार से रसोई तक का मार्गक्रमण कहता है । अपने जीवन को क्षणभंगुर कहता है । इन्सान अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही सारा जीवन किस तरह बिताता है । इसका वर्णन इस कविता में किया है । अत: विषय वैविध्य से भरा परंतु व्यक्तिगत विषय युक्त "इतिहास बोध" खंड समाप्त होता है ।

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ३०.

"देशाप्रेम" इस संक्लन दूसरा खंड है । इसमें कुल १३ रचनाएँ है । जिनमें प्रमुख है - देशाप्रेम, ईश्वर को खूली, जनता, मंत्री की मैना, युध्द और युध्द विराम के बीच, सवाल आदि । इनमें मुख्यत: देश, देशाप्रेम, देशाभक्ति, देशाद्रोह, जनता की स्थिति, मंत्रियों के किया क्लाप, चुनाव, भ्रष्टाचार, झूठे आश्वासन, युध्द, निम्न वर्ग के लोगों की समस्याएँ आदि विषयों विवेचित किया गया है । इसप्रकार देश तथा देश के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कवि ने अपने विषय विकास की ओर कदम बढ़ाया है । जो कि पूर्ववर्ती संग्रहों में इसतरह के विषयों की कमी महसूस की जाती है ।

इस खंड में सबसे पहले कवि अपने देशपर झूठा तथा स्वार्थी देशाप्रेम करनेवाले लोगों (मंत्री लोगों) के ऊपर अपने व्यंग्यबाण चलाये है । आज कल जब कभी परीक्षा की घड़ी आती है । तब ये लोग झूठे देशाप्रेम को डोंडी पिटवाकर, जगह-जगह सभाएँ आयोजित करके उसे व्यक्त करते है । सामान्य लोगों को पुसलाते है । ऐसे स्वार्थी लोगों पर अपने व्यंग्यबाणों की बौछार करते हुए कवि कहता है -

"देशाप्रेम
जो संकट आते ही
समाचार पत्रों में डोंडी पिटवाकर
कहलाया जाता है
बार बार ।" [१]

स्वार्थी लोग अपनी सत्ता का किसतरह उपयोग कराते है । अपना स्थान बनाये रखने के लिए किसतरह की नारेबाजी करते है । किस तरह

---

१. जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ३५.

अपने देशप्रेम को (झूठे) व्यक्त करते रहते है । इसका सजीव वर्णन कवि ने "देशप्रेम" कविता के माध्यम से किया है । कविता का नाम विष्यानुकूल लगता है । कविता के नाम से ही कविता का हेतु स्पष्ट नजर आता है । इसे कवि की काव्य कला का एक पहूलू माना जा सकता है ।

कवि अपने देश की जनता की स्थिति को स्पष्ट करता है । एक कविता "ईश्वर को सूली" (जो बस्तर गोली कॉंड की प्रतिक्रिया स्वरूप कवि ने लिखीं है) के माध्यम से कवि ने शासकों की निष्क्रियता तथा सामान्य लोगों का सच्चा देशप्रेम अभिव्यक्त किया है । अपने अधिकारों के जरिए शासक लोग सामान्य लोगों के अधिकारों को किसतरह कुचल देते हैं । शासकों की कठोरता के कारण देशभक्तों को उनके आगे किसतरह झूकना पड़ता है । इसकारण देश भक्तों की स्थिति सूली चढ़ाये जानेवाले पशु की तरह होती है । इसतरह का सजीव वर्णन कविने इस कविता में किया है ।

देशप्रेम और देश की जनता की स्थिति का अवलोकन करते करते कवि युध्द और उसके बाद निर्माण हुई समस्याओं का वर्णन करता हैं । जो "युध्द और युध्द विराम के बीच" कविता में मूर्त रूप में आ गया है । इसमें कवि ने युध्द की स्थिति, उसके लिए जिम्मेदार लोग तथा युध्द के समय जनता पर बीती स्थिति का अंकन सही शब्दों में किया गया है ।

शासक लोगों की कठोरता के आगे देशभक्तों की हार होने के कारण सामान्य जनता का उपयोग अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए शासक लोग किस तरह करते है । इसका चित्रण कवि ने "जनता" कविता में किया है ।

- -

शासक लोगों के हाथ में जब कोई नहीं बचता । तब वे सामान्य जनता को भड़काकर, फुसलाकर, उन्हें अपनी ओर खिंच लेते है । उनका उपयोग अपनी योजना के अनुसार अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए करवाते है । इसतरह के विचारों को इन पंक्तियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है -

"जब कुछ भी
अतल अंधकार के सिवा नहीं बचता
तब लोगों को
बासों की तरह इस्तेमाल किया जाता है
हहराते सागर में
गहराई नापने के लिए ।" [१]

इससे यह पता चलता है कि, नेता तथा शासक लोग अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए सामान्य जनता का उपयोग करवाते है, लेकिन उनकी समस्याएँ नहीं सुलझाते । उनकी किसी भी बातों की ओर ध्यान नहीं देते । सिर्फ अपना स्थान बरकरार रखने की कोशिश निरंतर करते है ।

इस खंड में और भी कुछ रचनाएँ है । जो परंपराओं, मान्यताओं, रुढ़ियों और संस्कारों की विडंबना करती हुई नजर आती है । साथ ही कुछ रचनाओं में अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए नेता लोगोंद्वारा जनता को दिए जानेवाले झूठे आश्वासनों, और जनता को फँसानेवाले तरिकों को स्पष्ट किया है । लेकिन निम्न वर्ग के लोग जो मानवता की डोर से बँधे रहते है । अपना जीवन सुखी बनाते है । इसतरह नेता तथा निम्न लोगों दोनों की तुलना कवि ने अपनी "तुलना" कविता में की है । यह कविता नाम की तरह सार्थक है तथा यथार्थ की कसौटी पर खरी उतरती है ।

---

१. जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ४२.

कवि दुष्यंतकुमार अपनी कविता का विषय मंत्री तथा मंत्रियों के रंगीले क्रिया-क्लापों को भी बनाया है । देश की एकता, देश की संस्कृति की चिंता न करनेवाले मंत्री अपनी-अपनी कुर्सियों को खुष रखना चाहते है । उन्हें किसी भी समस्या का कोई गम नहीं होता । वे सिर्फ अपनी जगह पर अटल रहना चाहते है । चाहे युध्द की स्थिति हो या शांति की । उन्हें किसी भी बात की फिकर नहीं होती । वे सिर्फ स्वहित की माला जपते रहते है । वे दूसरों को भूखा अखकर अपना पेट भरने की सोचते है । ऐसे स्वार्थीमंत्री लोगों के क्रिया-क्लापों पर व्यंग्यबाण चलाते हुए कवि कहता है -

"भारत यदि भूखा है, होने दे
वियतनाम जलता है, जलने दे
व्यर्थ तू झूलसती है
बोल मेरी मैना तुझे क्या दूख है ।" [१]

इसतरह अपने देश तथा देशवासियों के बारे में सोचते-सोचते कवि मन अनेक विचारों में खोया रहता है । कवि को कई सवाल सताते रहते हैं । इन सवालों को कवि अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत करता है। उस कविता का नाम ही कवि ने "सवाल" रखा है । इसके माध्यम से कवि यह सवाल करता है कि जो लोग कुछ काम नहीं करते । अपनी जिंदगी ऐषोआराम में बिताते है । उनके पास इतना धन कहाँ से आता है ? जिन लोगों को खेती का पता नहीं । उनके पास इतना धान्य कहाँ से आता है ? उनका पेट इतना बड़ा कैसा होता है ? इन सवालों के जवाब ही कवि ने

---

१. जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ५१.

इस कविता में दिये है । जो यथार्थ की दृष्टि से सही लगते है । इनके जवाब में कवि ने उन लोगों की काली करतूतों तथा स्वार्थी और अन्यायी प्रवृत्ति को चित्रित किया है ।

संसार के अनुसार मनुष्य जीवन में भी परिवर्तन आता रहता है । कल तक जिन्हें श्रेष्ठ (मैत्री) कहा जाता था, संसार की गति विधियों के कारण आज उन्हें कोई भी नहीं पूछता । उनके चेहरे की असलीयत समाज के सामने आने के कारण उनका पर्दा फाश हो चुका है । उनके सारे अवगुणों से समाज परिचित हो चुका है । इसतरह सगुणों से अवगुणों का सफर इन्सान किसतरह तय करता रहता है इसका परिचय कवि ने "एक चुनाव परिणाम" कविता से दिया है ।

कवि स्वार्थी, भ्रष्टाचारी,अन्यायी, अत्याचारी, नेताओं की असलीयत समाज के सामने प्रस्तुत करता रहा है । "गाते-गाते" कविता में भी कवि ने नेताओं की स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण निर्माण हुई सामान्य जनता की स्थिति का सही अंकन किया है । इन लोगों के झूठे आश्वासनों को सामान्य लोग किस तरह जताते रहे हैं । उन्हें वोट देते रहे है । इन्हीं बातों की इस कविता में अभिव्यक्ति मिली है । कविता की यह पंक्तियाँ ही कवि के इन विचारों का वहन सहजता से करती हुई नजर आती है -

"तुम्हारा आभारी हूँ रहनुमाओं
तुम्हारी बदौलत मेरा देश
यातनाओं से नहीं,
फूलमालाओं से दबकर मरा है ।" १

---

१. जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ५९.

पूरी तरह अपने देश, देश की जनता, जनता की समस्याएँ, तथा स्वार्थी मंत्रियों के क्रिया-क्लापों से जूड़ा यह "देशप्रेम" खंड समाप्त होता है । इस खंड में शामिल हुई सभी रचनाएँ अपने नामों के अनुसार सही लगती है । देश से संबंधि त विषयो को लेकर अवतरित हुई है ।

इस संक्लन का अंतिम खंड "चक्रवात" नाम से जाना जाता है । कवि ने इसे अपने एक मित्र "रमाकांत" के नाम लिखा है । इसमें २१ कविताएँ शामिल है । इन कविताओं के माध्यम से अनेक विषयों का विवेचन किया है । इनमें से "एक शाम की मन:स्थिति, वर्षोवाद, प्रतीति, स्वस्तिक क्षण, पहुँच, सृष्टि की आयोजना, एक समझौता, तुम्हे कैसे भूल जाउँ" प्रमुख है । जिनमें विषय वैविध्य नजर आता है ।

इस खंड में कवि कुछ मानसिक विरह, निराशा, आशा, कुछ अच्छे पल, कुछ यादें, कुछ कल्पनाएँ, कुछ अपनी बातें, कुछ दूसरों की बातें, कुछ भूलावें, कुछ स्वप्न प्रस्तुत करता हुआ नजर आता है । प्रथम कविता में ही उन्होंने अपनी मानसिक स्थिति का उद्‌घाटन अनेक उदाहरणों के साथ किया है । कहीं उन्हें अपना मन समुद्र जैसा विशाल लगता है, तो कहीं पंछी जैसा सुनसान राहों में भटकता हुआ । तो कहीं आकाश की तरह निश्चल नजर आता है । इसतरह अपने मन के अनेक कोण कवि ने "एक शाम की मन:स्थिति" [२] कविता में प्रस्तुत किये है ।

कवि मन की बातें करता हुआ अपने निराश मन को आशा की किरणें दिखाता है । इस आशा की किरणों कोकवि ने "वर्षोबाद" कविता में प्रसारित किया है । कवि वर्षो से अनेक सपने देखता आया है ।

---

१. जलते हुए वन का वसंत - डॉ. हरिचरण शर्मा "चिंतक" पृ.६२.

उन्हें वह सच्चाई में लाना चाहता है । इसलिए वह अपने अतीत को, इतिहास को बदलने की बात करने लगा है । कवि मन अब इतिहास की ओर मुड़ा है । सारे इतिहास को बदलने की आशा मन में लेकर अवतरित हुआ है । आज तक जो कुछ भी धूमिल - सा लग रहा था, उसे वह साफ करना चाहता है । सारे बंधनों, रीति रिवाजों परंपराओं को तोड़कर अपने समाज को, देश को, एक नया रूप देना चाहता है । इसलिए वह कालचक्र को भी क्षात-विक्षात कर देने के लिए अपनी भूजाएँ खोलकर खड़ा है । अपनी भूजाओं की ताकद से वह एक नयी सृष्टि का निर्माण करना चाहता है -

"आओ पास
मैं भूजाएँ खोलकर थोड़ा बदल दूँ
समय का इतिहास।" [१]

परंतु समय के इतिहास को बदल देनेवाला कवि समय के घेरे में घेरा हुआ नजर आता है । उसे अपनी प्रेमिका का प्यार याद आता है । प्रेमिका के साथ बीतें-पलों को वह अपनी कविता में चित्रित करता है । अपनी प्रेमिका का प्यार, उससे मिलना, उसके लिए संसार को त्यागने की भावना, उससे बिछड़ने के बाद की स्थिति आदि को कवि ने "प्रतीति" [२] नामक रचना में बडे ही मार्मिक और भावपूर्ण शब्दों में अभिव्यक्त किया है । जिससे कवि का प्यार और प्रेमिका से बिछड़ने का गम साफ नजर आता है ।

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ६४.
२) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ६५.

एक ओर कवि अपने निराश मन को कविता की आत्मा बनाता है, तो दूसरी ओर वह अपने मन को शांत तथा खुष पाता है । "स्वस्तिक क्षण" कविता को इसका सबुत कहा जा सकता है । इस कविता में कवि ने अपने मन को, अपने जीवन को शांत तथा सफल सफर के रूप में प्रस्तुत किया है । इसमें कवि ने अपने मन को घुंघरू, आँगन में पड़ी धूप को पायल की आवाज, और हवा को कंगण की खणाखण मानते हुए अपने जीवन को समृध्द माना है । इस कविता में मन, धूप और हवा को दी हुई उपमाएँ बड़ी ही लाजवाब और, सही लगती है । इसतरह खुशी के पल बिताते हुए कवि अपना जीवन सफर तय करता रहा है ।

इस जीवन सफर में कवि कहाँतक पहुँचा है, इसका परिचय "पहुँच" कविता कराती है । कवि किसी के साथ चलते-चलते जीवन सफर तय कर रहा था । समय परिवर्तन के साथ-ही दुनिया में भी अनेक परिवर्तन हो गये । इस बात को कवि ने अपनी कविता में बड़ी ही सरल भाषा में चित्रित किया है । यह कविता "चीनी टंका" नामक छंद में लिखी गयी है । इसमें कवि ने जीवन सफर में सावधानियों के बंधनों में न बंधकर आकर्षण और मोह की दुनिया-से दूर ले जाने की बाते कर रहा है -

"तुम्हारे साथ
देखते देखते
× × × ×
× × × ×
जल संकुल नगरों से दूर निकल आया हूँ
हाथों में थामे तुम्हारा हाथ ।" [१]

---

१. जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ७३

इसतरह दुख, निराशा का हाथ थामकर कवि अपने जीवन पथ पर चल रहा है । लेकिन वह कभी निराश नहीं हुआ है । उसका मन सदैव प्रसन्न रहा है । वह अपने जीवन को अपने अनुसार बिताना चाहता है । उसके कुछ सपने हैं, कुछ कल्पनाएँ हैं । उन कल्पनाओं को वह प्रत्यक्ष जीवन में अवतरित करना चाहता है । लेकिन कठोर काल ने उनकी कल्पनाओं को कोरी कल्पनाओं तक ही सीमित रखा । उन्हें कभी अस्ली रूप में, सही आकार में उभरने नहीं दिया । उनकी यह कल्पनाएँ टूट जाती है । कोई कल्पना आकार ग्रहण नहीं कर रही है । इस बात की स्पष्टता इन पंक्तियों से मिलती है -

"कोई आकार नहीं लेता, हर स्वप्न,
मेरी उंगलियों में
सृजनशीलता की झनझनाहट जगाकर
टूट जाता है ।" [१]

कवि ने कितने सपने देखे है, कितनी कल्पनाएँ की होगी । मगर इनमें से कुछ ही साकार हुई होगी, कुछ ने ही आकार लिया होगा, बाकी अधूरे रही होगी । फिर भी कवि निराश नहीं होता । वह अपने मन को सदैव आशा की किरणें दिखता रहा है । उसे अपने सपने दिखाता रहा । कवि ने अपने सपनों की एक दुनिया ही पाठकों के सामने कविताओं के माध्यम से रखी है । सपनों की इस दुनिया में वह अपने गीतों को पाठकों के लिए छोड़ गया है । उनके जरिए वह अपने को पाठकों में सदैव जीवित रखना चाहता है । उसे विश्वास है कि, जीवन में कभी भी स्थिर नहीं रहना चाहिए । अपना कार्य करते रहना चाहिए । उसमें कभी बाधा उत्पन्न नहीं होगी । इसतरह का विश्वास कवि ने "मेरे स्वप्न" कविता में व्यक्त किया है ।

१.जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ८३.

कवि दुष्यंतकुमार का यह काव्य संकलन अपने विषय वैविध्य को लेकर अवतरित हुआ है । इसमें जीवन के दुख-दर्द, आमआदमी की पीड़ा, समस्याएँ, देश, देशप्रेम, नेताओं के क्रियाकलाप तथा जीवन संबंधी अपने आशाएँ, विश्वास, गतिशीलता एवं जीवन में आयी कठिनाइयों से जुझने की शक्ति आदि विषयों को प्रस्तुत किया है । अत: इन कविताओं की कलात्मकता का परिचय करवा लेना भी हमारा कर्तव्य होगा ।

कवि दुष्यंतकुमार के इस संकलन में विषय-वैविध्य नजर आता है । इसके पूर्ववर्ती काव्य संकलन "पहली पहचान" में व्यक्तिगत शृंगारिक गीत तथा कुछ सामाजिक, राजनीतिक प्रभावों को ग्रहण करके लिखीं रचनाएँ हैं । उसके बाद "सूर्य का स्वागत" कृति में कवि का व्यष्ठि समष्ठि की ओर चल पड़ा है । उसमें समाज तथा समाज के दुख-दर्द, समस्याएँ आदि का चित्रण किया है । "आवाजों के घेरे" कृति में उन्होंने अनेक वादों, सामाजिक, राजनीतिक प्रभावों को बारिकी से रेखांकित किया है । साथही अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह के लिए समाज को ललकारा है । विषयों के क्षेत्र में अपने काव्य विकास को कवि ने जारी रखते हुए "जलते हुए वन का वसंत" संकलन तो अनेक विषयों से भरा हुआ है ।

पूर्ववर्ती काव्य संकलनों की अपेक्षा इसमें कुछ बदलाव आयें हैं । इसमें भूमिका का जिक्र किया गया है । कवि ने इसे तीन खंडो में विभक्त करके लिखा है । इसमें विषयों की विविधता है । कुछ कवि के स्वयं के विषय है । कुछ प्रेम-प्यार के, कुछ विरह के । कुछ जीवन जीने की लालच के, कुछ सपने देखने एवं कुछ सपने, संकल्प टूटने के । साथ ही कुछ देश, देशप्रेम, देशद्रोही, स्वार्थी शासक, देश की जनता की समस्याओं को उजागर

करनेवाले विषय इस संकलन में शामिल है । इसके पूर्व लिखे किसी भी संकलन में विषयों में इतनी विविधता नहीं है । उन्होंने संकलन के अनुसार विषयों को चुना है । इस संकलन में कवि ने कविताओं के नाम के अनुरूप विषयों को चुना है । खंड के अनुरूप विषय विवेचन किया है । इसकारण हर एक कविता अपने विषय को व्यक्त करने में सक्षम रही है । इसे कवि के विषयात्मक विकास में योगदान मिला है । इसकारण यह संकलन कवि दुष्यंतकुमार के काव्य विषयों के विकास का चरण माना जा सकता है ।

दुष्यंतकुमार विविधता के कवि कहलाये जा सकते है । क्योंकि रचना विधान के क्षेत्र में उन्होंने अपने प्रत्येक संकलन के लिए कुछ नये प्रयोग अपनाये है । अपनी काव्य कला को विकसित करने का प्रयास किया है । पूर्ववर्ती काव्य संकलनोंमें रचना विधान के अनेक पहलू कुछ संकलनों में आये है । कुछ संकलनों में उन्हें स्थान नहीं मिला है । कवि ने उन्हें छोड़ नही दिया है । बल्कि अन्य संकलन में उसे अपनाकर उसकी कमी को दूर किया है । अपनी काव्य कला की कमी को महसूस होने नहीं दिया है । अत: इस काव्य संकलन को काव्य की कसौटियों पर कस कर देखना होगा ।

कवि ने "जनते हुए वन का वसंत" काव्य संकलन के लिए सामान्यत: दृश्यबिंब, ध्वनिबिंब, कलात्मक बिंब, धार्मिक बिंब और वैज्ञानिक बिंब को अपनाया है । बिंबों के क्षेत्र में सिर्फ इस संकलन में "संयुक्त बिंब" को अपनाकर कवि ने अपने काव्यात्मक विकास की झलक दिखाई है । इस बिंब के अंतर्गत पदार्थों, वस्तुओं तथा स्थानों को बिंब बनाया जाता है । इसका प्रयोग कवि ने "अस्तिबोध" रचना में किया है -

---

"जैसे उस दिन, दीवार गिर पड़ी थी एक बच्चेपर
किसी ने कहा, आओ देखें ।
मैंने घड़ी देखी, नौ बजकर तीस हो चुका था
मेरा चेक बैंक में रुका था ।" [१]

इस बिंब का प्रयोग अन्य किसी भी संकलन में दुष्यंतकुमार ने नहीं किया है । इसकारण इसे कवि के काव्यात्मक विकास का चरण माना जा सकता है ।

बिंबों के अलावा अपनी काव्यात्मक गतिशीलता को बनाये रखने के लिए आवश्यक प्रतीकों को इस संकलन में अपनाया गया है । प्रतीकों में मुख्यत: प्राकृतिक प्रतीक, कलात्मक प्रतीक का आयोजन किया गया है । इसमें जनजीवन से गृहित कुछ प्रतीक भी मिलते है । जिसका प्रमाण "एक और प्रसंग" कविता की इन काव्य पंक्तियों से मिलता है -

"साँवली लकीरों के साँपो ने घेर लिया
कह गयी पतंग
अंधकार का अजगर लील गया
एक एक पंख ।" [२]

प्रतीकों के क्षेत्र में भी उन्होंने हरएक प्रकार के प्रतीकों अपनाया है । अपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने "पतंग" को इच्छाओं का, साँप को संकट, एवं विभिषिकाओं का प्रतीक माना है । अत: "पतंग" जनजीवन से गृहित प्रतीक है ।

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ३०.
२) - वही - पृ. ८१.

काव्य में अप्रस्तुत विधान का क्षेत्र होता है । अप्रस्तुत विधान का प्रयोग काव्य में चमत्कार लाने तथा काव्याभिव्यक्ति को अधिक प्रभाव-पूर्ण बनाने के लिए किया जाता है । इसके मुख्यत: तीन उपविभाग होते है । "परिवेश गत अप्रस्तुत विधान, उपमान विधान, और अलंकार विधान । अंत: इनमें से कवि ने सिर्फ दो प्रकारों को ही इस संक्लन में अपनाया है ।

अप्रस्तुत विधान के क्षेत्र में प्रकृति जन्य अप्रस्तुत, जीवन के क्रिया-कलापों संबंधी अप्रस्तुत, वैज्ञानिक अप्रस्तुत आदि का समावेश कवि ने किया है । इनमें से वैज्ञानिक अप्रस्तुत को छोड़ अन्य सभी का प्रयोग पूर्ववर्ती काव्य संक्लनों में एक-दो जगह हुआ है । इसकी वजह यह हो सकती है यह संक्लन वैज्ञानिक युग में लिखा है । "गीत" कविता में इसका प्रयोग हुआ है । जो निम्न पंक्तियों में स्पष्ट होता है -

"पार्श्व में, प्रसंगो में
व्यक्ति में, विधाओ में
साँस में, शिराओं मे
पारा-सा ढाल गया ।"[१]

इसमें पारा और रेल को उपमान रूप में चुना गया है । इस प्रकार के अप्रस्तुत अन्य कविताओं में भी नजर आते है । कवि ने ऐसे उपमानों को अपनाकर अप्रस्तुत विधान के क्षेत्र में अपना विकास दिखाया है ।

भाषागत अप्रस्तुत विधान के क्षेत्र में भी कवि ने मूर्त के लिए अमूर्त, अमूर्त के लिए मूर्त, और मूर्त के लिए मूर्त अप्रस्तुत का प्रयोग बड़ी मात्रा में

---

१. जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ६८.

किया है । इन अप्रस्तुतों को कवि ने पूर्ववर्ती काव्य संकलनों में भी अपनाया होने के कारण इस क्षेत्र में कवि की विकसित प्रवृत्ति नहीं नजर आती ।

अलंकारिक अप्रस्तुत विधान के क्षेत्र में इस संकलन में कुछ कमी महसूस की जाती है । इसकी अपेक्षा पूर्ववर्ती संकलनों में कवि ने इस प्रकार के अप्रस्तुतों को अपनाया है ।

छंद तो काव्य की आत्मा कहलाया जाता है । कवि दुष्यंतकुमार ने तो हर एक काव्य संकलन में अलग-अलग छंदो को अपनाकर अपने काव्य में छंदात्मक विविधता लायी है । "जलते हुए वन का वसंत" काव्य संकलन में ज्यादातर "लय की समानतावाले मुक्त छंद को ही अपनाया गया है । इस संदर्भ में ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है, जो "विदा के बाद : प्रतीक्षा" कविता से ली गयी है -

"सिर्फ कल्पनाओं से
सुखी और बंजर जमीन को खरोंचता हूँ
जन्म लिया करता है जो (ऐसे हालात में)
उसके बारे में सोचता हूँ
कितनी अजीब बात है कि आज भी
प्रतीक्षा सहला हूँ मैं ।" [१]

इस छंद के अलावा अन्य छंद न के बराबर है ।

कवि दुष्यंतकुमार तो नव्यता के कवि कहे जाते है । उन्होंने काव्य के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन प्रयोगों को अपनाकर हिन्दी कविता को उनसे परिचित

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ७५.

कराया है । "जलते हुए वन का वसंत "संकलन में भी उन्होंने "चीनी टंका" नामक एक नये छंद का प्रयोग किया है । इसीतरह "सूर्य का स्वागत" कृति में भी"त्रिपदी" नामक नये छंद का प्रयोग कवि द्वारा किया गया था । "चीनी टंका" छंद में ३ से ५ तक चरण लिखे जाते है । लेकिन भारतीय कवियों के अनुसार इनकी संख्या १० तक बढ़ायी गयी है । इस के अनुसार दुष्यंतकुमार ने "पहुँच" कविता में इस छंद को अपनाकर अपने काव्य विकास की झलक दिखाई है -

"तुम्हारे साथ
देखते देखते
समुद्र पर पुल बन गया है,
ऊँचे गिरि-शिखरों तक सड़क
जन संकुल नगरों से दूर निकल आया हूँ -
हाथों में थामें तुम्हारा हाथ ।" [१]

अत: कहने की आवश्यकता नहीं कि, दुष्यंतकुमार की छंद योजना विस्तृत होती गयी है । उन्होंने पुराने से नये तक के छंदों को अपने काव्य के लिए अपनाया है ।

छंद के बाद भाषा आती है । काव्य भाषा जितनी सक्षम रहती है, काव्य उतना प्रभावी बनता जाता है । "जलते हुए वन का वसंत" काव्य संकलन के लिए कवि ने उपमान युक्त, बाकँपन युक्त, तीखी, ग्येयतापूर्ण और अंग्रेजी बाहुल्य, संस्कृत मिश्रित, मुहावरों से भरी बोलचाल की भाषा को अपनाया है । इस तरह सर्व गुण संपन्न भाषा अन्य किसी भी संकलन के

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ७३.

लिए नहीं अपनायी गयी है । कवि द्वारा अपनायी गयी बाकंपन युक्त भाषा की अनुठी उपलब्धि "वसंत आ गया" कविता की इस पंक्ति में मिलती है -

"नया नया पिता का बुढ़ापा था ।" [१]

साथ ही गीतात्मकता को स्पष्ट करनेवाली ये पंक्तियाँ --

"जिंदगी ने कर लिया स्वीकार
अब तो पथ यही है ।" [२]

इसतरह कवि दुष्यंतकुमार अपनी रचनाओं के लिए अलग-अलग किस्म की भाषा अपनाते गये है । जिसके कारण उनका साहित्य बड़ा ही प्रभाव-पूर्ण बन गया है । उन्होंने कुछ रचनाओं में मुहावरें का भी प्रयोग किया है । इसी वजह से उनकी काव्य भाषा बोलचाल की भाषा बन गयी है । इसका प्रमाण -

"सिर्फ इस कलम के सहारे
सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे ।"
बड़े बड़े पर्वत धकेलने पड़ेंगे ।" [३]

इसतरह काव्य भाषा को अधिक प्रभावी और आत्मीय बनाने के लिए उन्होंने अंग्रेजी बाहुल्य भाषा संस्कृत मिश्रित भाषा को भी अपनाया है । इसीकारण उनका यह संकलन बड़ा ही सजीव, सहज बोध गम्य, प्रभावपूर्ण और मार्मिक लगता है ।

---

१) जलते हुए वन का वसंत - दुष्यंतकुमार, पृ. ३१.
२) - वही - पृ. २८.
३) - वही - पृ.

इसके अलावा इसमें कई दोष भी नजर आते है, जो अन्य संकलनों में भी दिखाई देते है । इसमें शब्दों के लिंग और वचन में परिवर्तन, वाक्यों को अधूरा छोड़ना, डैश लगाना आदि प्रमुख है ।

फिर भी दुष्यंतकुमार का यह काव्य संकलन अन्य काव्य संकलनों की अपेक्षा निराला सा साबित होता है । क्योंकि इसमें भूमिका का निर्वाह पहली बार हुआ है । इसे तीन खंडो में विभाजित किया है । खंडो के नाम उसमें समायी गयी कविताओं के विषयानुकूल है । इसमें छंद, प्रतीक, अप्रस्तुत विधान, भाषा के क्षेत्र में भी कुछ नये प्रयोग मिलते है । जो अन्य पूर्ववर्ती काव्य संकलनों में न के बराबर है । इस संकलन की भाषा सहज, सरल, बोधगम्य, तीखी, व्यंग्यात्मक भाषा है । जिसके कारण काव्याभिव्यक्ति में प्रभावपूर्णता समायी है । अत: यह काव्य संकलन अन्यों की अपेक्षा बड़ाही सशक्त संकलन कहा जा सकता है ।

साये में धूप :

कवि दुष्यंतकुमार की काव्य यात्रा की अंतिम कृति के रूप में "साये में धूप" कृति आती है । "साये में धूंप" कृति एक अलग रूप में लिखीं हुई है । यह कृति कवि की उर्दु काव्य शैली को प्रस्तुत करती है । इसमें ५२ गजलें संकलित है । यह कृति ग़ज़ल के रूप में लिखकर कवि दुष्यंतकुमार ने अपनी काव्यकला विकास की ओर एक मंजिल को पा लिया है । इसका प्रकाशन समय सन् १९७५ है । इसकृति के कारण ही कवि को प्रसिध्दि की चोटी पर बिठाया गया । लेकिन काल की कठोरता के कारण अधिक समय तक कवि इस विधा का साथ नहीं निभा सका ।

- -

"गज़ल" का शाब्दिक अर्थ "प्रेमचर्चा" है । पूर्वकालीन कवियों ने इस विषय को प्रधान विषय मानकर ही गज़ले लिखीं है । लेकिन परंपरागत विषय को कवि दुष्यंतकुमार ने त्याग कर अपनी गज़लों में अन्य विषयों को समाया । इन गज़लों में उन्होंने देश, देश की जनता की समस्याएँ, देश-प्रेम और शृंगारिकता जैसे विषयों व्यक्त किया है । इस कृति को दुष्यंत-कुमार के विषय विकास का चरण माना जा सकता है । क्योंकि अन्य पूर्व-वर्ती संकलनो में कवि ने समाज, राजनीति, तथा देशप्रेम, देशद्रोह, देश की समस्याएँ आदि विषयों को अभिव्यक्त किया है । मगर यहीं विषय गज़ल के रूप में लिखकर कवि ने अपनी श्रेष्ठता की पहचान दी है ।

उन्होंने अपनी लेखन शैली का सिर्फ शरिर बदला है । लेकिन उसकी आत्मा वही रही है, जो पूर्ववर्ती संकलनों की है । इसी वजह से उनकी गज़ले वहीं विषय लेकर उपस्थित हुई है, जो उनकी कविताओं के विषय है । अत: दुष्यंतकुमार ने कुछ राजनीतिक, सामाजिक और कुछ जीवन के सुख-दुख और कुछ अन्य विषयों को इस संकलन के माध्यम से विवेचित किया है ।

कवि दुष्यंतकुमार की गज़लो से ऐसा लगता है कि, गज़ल जनसाधारण के विचारों, और भावों को व्यक्त करने का साधन है। इसलिए शायर ने अपनी गज़लो में जनसाधारण के विचारों और भावों को समाया है । उसके माध्यम से उन्हें व्यक्त करने का प्रयास किया है । इसकी वजह यह हो सकती है कि, शायर को सामान्य लोगों के दुख-दर्द नजर आते होंगे, महसूस होते होंगे । इसका प्रमाण प्रस्तुत करते हुए एक शेर में उन्होंने कहा है -

"मुझमें रहते है करोड़ो लोग चुप कैसे रहूँ
हर गज़ल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।"[१]

---

१) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ५७

उन्होंने अपनी गज़लों में जनसाधारण से संबंधित, देश से संबंधित विषयों को ही समाया है । उनके इस गज़ल संक्लन में सामाजिक, राजनीतिक विषय, जीवन के सुख-दुख, कुछ आव्हान, तथा कुछ प्रेरणाएँ और कुछ अन्य विषयों को देखा जा सकता है ।

शायर दुष्यंतकुमार ने अपने संक्लन की शुरुवात ही सामाजिक विषय से करके अपनी शेर को सही साबित किया है । उन्होंने सामाजिक सहन-शीलता की सीमा का जिक्र करते हुए उसपर चोट करते हुए कहा है -

"न हो कमीज तो पाँवो से पेट लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब है इस सफर के लिए ।" [१]

लेकिन यह तो सहनशीलता की मर्यादा से बाहर नजर आता है । इससे बेहतर पशुओं का जीवन होता है । क्योंकि जानवरों से भी बुध्दि-मान इन्सान है । फिर भी लाचार की जिंदगी वह क्यों जीता है ? उसकी क्या मजबूरी है ? इसके विरोध में हम आवाज क्यों नही उठाते ? अगर आवाज उठाते भी है तो उन लोगों के पास तक क्यों नहीं पहुँच पाती है ? इन प्रश्नों का जबाब ही खुद शायर देता है । और कहता है कि, हम लोग इस अन्याय, अत्याचार के विरुध्द आवाज तो उठाते है मगर बंद कमरे में बैठे हुए उन सफ़ेद कपड़े वालो को हमारी आवाज सुनाई नहीं देती । क्योंकि हमारी आवाज में तीव्रता की कमी है । जिस दिन हमारी जुबान चलेगी उस दिन उन लोगों के होश उड़ जायेंगे, खुशियाँ डावाडोल हो जायेगी, आँखों के सामने तारे चमकेंगे । इतना सब कुछ होते हुए भी हम चुप क्यों रहते है ? इसलिए शायर हमारी आवाज को ऊँची करने के लिए अन्याय, अत्याचार के विरुध्द हमारा हक्क माँगने के लिए हमारी

---

१. साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. १३.

जुबान को सशक्त बनाता हुआ नजर आता है -

"चीख निकली तो है होठों से मगर मध्दम है
बंद कमरों को सुनाई नहीं जानेवाली ।" [१]

इसतरह अगर हमारे अधिकारों के लिए हम लड़ने के लिए तैयार हो जायें, आवाज उठाये तो हमें कोई भी नहीं रोक सकता । लेकिन इस देश के स्वार्थी नेता लोग समाज के लिए कुछ नहीं करते । वे तो सिर्फ देश के संविधान को अपनी झोली में लेकर घुमते रहते है । संविधान के बिना वह कोई भी कदम नहीं उठाते है । मगर अपनी स्वार्थ पुर्ति तो वे संविधान को बाजू में रखकर करते है । क्योंकि हमारे देश की अज्ञानी जनता को संविधान की जानकारी नहीं है । जब भी कोई समस्या, कोई बिकट स्थिति पैदा होती है तो ये शासक लोग संविधान के आधार पर उसका इलाज करते रहते है । असल में यह संविधान की विडंबना, नेता लोगों की चालबाजी तथा जनता को फँसाने का तरिका है । हमारे देश की जनता उनपर विश्वास करके उनकी बातों को, झूठे आश्वासनों को सही मानती है । इसकारण शायर इस झूठी आश्वासनों का पर्दा फाश करते हुए शासक लोगों की असली-यत को प्रस्तुत करता हुआ कहता है -

"सामान कुछ नहीं फटेहाल है मगर
झोले में उसके पास संविधान है ।" [२]

इसतरह खाली हात होनेवाले मगर संविधान को दिखाकर जनता को फँसानेवाले शासकों, राजनीतिज्ञों की काली करतूतों का पर्दा फाश किया है । उनकी असलीयत को प्रस्तुत करके उनके चेहरे पर का नकाब उतार दिया है । उनके विरोध में जनता को उठ खड़े होने के लिए मार्गदर्शन किया है ।

---

१. साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. १७.
२. साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ५९.

खाली हाथ से घुमने वाले नेता लोग जगह-जगह पर अपने शब्दों का खेल दिखाकर सामान्य जनता की आँखों में धूल फेंकते है । आश्वासनों से भरी भाषा से जनता को फँसानेवाले शासक को शायर ने जम्हुरियत की उपमा देकर उनकी काली करतूतों तथा धोखेबाजी पर रोशनी डाली है । जो इस शेर से दिखाई देती है -

"तेरी जुबान है झूठी जम्हुरियत की तरह
तू एक जलील गाली से बेहतरिन नहीं ।" [१]

इसतरह धोखेबाजी, फरेब से किये जानेवाले शासक के देश में जनता पर क्या गुजरी होगी ? जनता की हालत कैसी होगी ? उन्हें किन-किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता होगा ? ये सारी बातें भी शायर ने अपनी गज़लों मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

जब कोई भी नेता तथा शासक अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए राजनीति में आता है । तो वह सिर्फ अपनी सोचता है । उसे सिर्फ अपने ही अपने लगते है । वह सिर्फ अपनी भलाई चाहता है । इसकारण उसे सामान्य जनता की किमत करनी नहीं आती । वह जनता के सुख दुख नहीं जानता, उनकी समस्याओं की ओर बिलकूल ध्यान नहीं देता । परिणामत: सामान्य लोगों को जीवन एक कटू सत्य की तरह लगता है । वह अपनी जिंदगी को खत्म करने की सोचता है । उन्हें अपना जीवन निरूद्देश्य लगता है । ऐसे निरूद्देश्य जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता हुआ यह शेर -

"जिंदगानी का कोई मकसद नहीं है
एक भी कद आज आदमकद नहीं है ।" [२]

यह सब होते हुए भी इन्सान को अपना जीवन अनमोल लगता है ।

---

१. साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ६९
२. " वही - पृ. ४१.

वह जीवन को किसी भी स्थिति में जीना चाहता है । लेकिन जब भी अँधेरा होता है, दुख का आगमन होता है । तो उसे यह जीवन यातनाओं से भरा नजर आता है । उसे वह त्यागने की सोचता है । फिर भी वह जीता जाता है । उन्हें समाज, शासन और अन्य बातों से होनेवाली यातनाएँ काँटो की तरह चुभती रहती है । ऐसी दुखपूर्ण, यातनाओं से भरी जिंदगी की तुलना शायर ने रात के अंधेरे से करके उसने अपना हेतु साध्य किया है । जो इस शेर से स्पष्ट होता है --

"रोज जब रात को बारह का गजर होता है,
यातनाओं के अंधेरे में सफर होता है ।" [१]

इसतरह का दुख इन्सान को स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण होता है । वह सदैव अपनी भलाई की ही बाते सोचता रहता है । इस कारण इन्सान में एक प्रकार का अलगाव आया है । वह एक दूसरे की खुशियों में दिल-चस्पि नहीं रखता । हर एक को सिर्फ अपने काम से मतलब होता है । वह दुख या खुशी के मौके पर भी एक दूसरे का साथ नहीं देता । इसकारण चारों ओर असुरक्षा फैली हुई है । इसी असुरक्षा के कारणही इन्सान में तटस्थता और निर्लिप्तता का भाव पैदा हुआ है । लोगों की ऐसी तटस्थता का पैगाम देता हुआ यह शेर है --

"इस शहर में कोई बारात हो या वारदात
अब किसी भी बात पर खुलती नहीं है खिड़कियाँ ।" [२]

यह तटस्थता अचानक नहीं आयी है । इसे सारे संसार ने धीरे

---

१. साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ४७.
२. - वही - पृ. २१.

धीरे अपनाया है । इतिहास भी गवाह बनकर हमारे सामने खड़ा है । इतिहास में तो भाइचरे को तोड़ने के लिए दुश्मनोंद्वारा किये गये प्रयत्नों को स्पष्ट किया गया है । लेकिन आज के लोगों ने भाईचरे को भूला देने - वाली पाश्चात्य संस्कृति को ही अपनाया है । इसतरह बुरी बातों को बढ़ावा देनेवाली पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर हमारे सुसंस्कृत लोगों ने अपने ही पाँवोंपर कुल्हाडी मार ली है । इसी वजह से हम अच्छी बातों की ओर जल्दी आकर्षित नहीं होते है । इस लिए शायर कहता है -

"आगे निकल गये है घिसटते हूए कदम
राहों में रह गये है, निशाँ और भी खराब ।" [१]

इसतरह पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकर्षित हुए, शासनद्वारा अन्यायी, अत्याचारी बने समाज को शायर कुछ आव्हान करता है । हमारे भटके हुए कदमों को सही रास्ते पर लाने का प्रयास कर रहा है । एक प्रकार से जिंदगी की नयी राह दिखाकर हमें सुधारने का मौका देता है । हम पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार, कोकम करने के तरिके बताता है । लेकिन इसके लिए हमें अपनी जिंदगी की कुछ बातों में हेर-फेर करना चाहिए । इसलिए यह आव्हानात्मक शेर दृष्टव्य है --

"जरा-सा तौर तरिको में हेर फेर करों,
तुम्हारे हाथ में कालर हो, आस्तीन नहीं ।" [२]

इसके लिए जरुरत है पुरानी परंपराओं, रुढ़ियों, रीतिरिवाजों को तोड़ने की । किसी भी बंधन को तोड़ने की शक्ति हमारे अंदर पैदा होनी चाहिए । हमें हर मुश्किल का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए ।

---

१. साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ६४.
२. - वही - पृ. ३३.

कहता है कि, यह गीत मेरी याद में मैं छोड़ जा रहा हूँ । अगर वे तुम्हारे पास सहारा माँगने आयेंगे तो उन्हें अपनी अध्ययनात्मक दृष्टि का सहारा देना । उनसे प्रेरणा लेकर मुझे याद करना । इसतरह अपने व्यक्तित्व को याद दिलानेवाले गीतों को भी शायर शेरबध्द करता हुआ कह रहा है -

"मेरे गीत तुम्हारे पास सहारा पाने आयेंगे,
मेरे बाद तुम्हें ये याद दिलाने आयेंगे ।" [१]

अत: विषयों की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि, दुष्यंतकुमार का यह गज़ल संकलन विषय-वैविध्य लिया हुआ है । इसतरह से विषयों को लेकर उपस्थित होनेवाले इस संकलन के क्लापक्ष का अध्ययन भी हमारे लिए जरूरी बात है ।

"साये में धूप" गज़ल संकलन का क्लापक्ष मजबूत नहीं नजर आता । इसका कारण यह हो सकता है कि, गज़ल कविता से अलग है । मगर कविता का एक अंग है । इसकारण कविता की सारी बातों को इसमें समाया नहीं जा सकता है । इसका और भी एक कारण हो सकता है कि, यह विधा उर्दु भाषा की देन है । इसकारण भी इसमें काव्य के सभी अंग नहीं समाये जाते है । लेकिन कुछ बातों को पूरी तरह से त्यागा भी नहीं जा सकता है । इसकारण दुष्यंतकुमार की इन गज़लों में बिंब का क्षेत्र पाया जाता है । बिंब में से प्रकृति बिंब तथा जीवन के क्रिया क्लापों संबंधी बिंब को ही अपनाया गया है । अपनी भावों की तरह शिल्प में भी नवीनता का परिचय देते हुए सामान्य जनता के प्रति अपना झूकाव "जीवन के क्रिया-क्लापों संबंधी वस्तुओं को बिंब रूप में ग्रहण करके प्रस्तुत किया है । जो दृष्टव्य है ।

"इस अहाते के अंधेरे में धुआँ सा भर गया
तुमने जलती लकड़ियाँ शायद बुझाकर फेंक दी ।" [२]

---

१) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ३५.
२) — वही — पृ. ५४.

किसी भी बात का डर नहीं होना चाहिए । इन बातों को गंगाजल में अर्पण करने को, दूर फेंक देने को शायर कहता है —

"पुराने पड़ गये है डर फेंक दो तुम भी,
ये कचरा आज बाहर फेंक दो तुम भी ।" [१]

इसतरह समान, राजनीति, और समाज को सुधारने के लिए प्रेरणात्मक आव्हानों को लेकर शायर ने शेर लिखे हैं । उन्होंने कुछ अन्य विषयों को भी अपने शेरों के माध्यम से व्यक्त किया हैं । उसमें प्रमुख है देशप्रेम और उसके स्वयं के गीत । जिसे प्यार की भाषा समझाती है वह संसार की सारी चीज़ों को प्यार की नजर से देखता है । संसार की हर चीज़ से वह प्यार करता है । दुष्यंतकुमार को भी अपने देश से सच्चा देश प्रेम है । उसकी देशभक्ति असीम है । वह अपने देश के लिए सब कुछ न्याछोवर करने के लिए तैयार है । वह अपनी मातृभूमि के लिए जीना चाहते है और मरना भी पसंद करते है । उनका देशप्रेम निस्वार्थी है । इसलिए वह कहते है -

"जिए तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,
मरे तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए ।" [२]

इस शेर में उनकी देशभक्ति की चरम सीमा नजर आती है । उन्होंने तो अपने देश को "गुलमोहर" की उपमा दी है ।

कवि ने अपनी कलम द्वारा लिखे गये गीतों को भी अपनी शायरी का विषय बनाकर गज़लों की दुनिया में बढ़िया कदम उठाया है । शायर

---

१. साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ३३.
२. - वही - पृ. १३.

इसतरह बिंब के क्षेत्र में कुछ नवीनता जरूर नजर आती है, जो पूर्ववर्ती संकलनों की अपेक्षा अलग है ।

प्रतीकों को भी शायर ने इस संकलन में अपनी भावाभिव्यक्ति को बराबर बनाये रखने के लिए अपनाया है । लेकिन बिंबों की तरह प्रतीकों की भी कमी महसूस की जा सकती है । इसमें से सिर्फ प्राकृतिक प्रतीक और कलात्मक प्रतीक ही नजर आते है । जो नवीनता की पहचान देते है । कलात्मक प्रतीक की नवीनता की पहचान देनेवाला यह शेर दृष्टव्य है । जिसमें शायर ने परंपराओं के लिए नया प्रतीक अपनाया है --

"लपट आने लगी है अब हवाओं में
ओसारे और छप्पर फेंक दो तुम भी ।" [१]

अप्रस्तुत विधान के क्षेत्र में भी कुछ मौलिक अप्रस्तुतों को अपनाकर अपनी काव्य कला की पहचान शायर ने दी है । इसमें वैज्ञानिक अप्रस्तुत का अनोखा प्रयोग हुआ है, जो युगानुकूल लगता है ।

"तू किसी रेल-सी गुजरती है ।" [२]

इसमें "रेल" को उपमान रूप में प्रयुक्त किया है । इस कोटि के अप्रस्तुत इस संकलन में कम है ।

भाषागत अप्रस्तुत में से सिर्फ "अमूर्त के लिए मूर्त" उपमानों का ही प्रयोग किया गया है । इसकी वजह से कवि की काव्य कला की कमी महसूस की जाती है । क्योंकि अन्य काव्य संकलनों में भाषागत अप्रस्तुतों की संख्या की

---

१) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ३३.
२) - वही - पृ. ६२.

तुलना में इस संकलन में सिर्फ एकही तरह के अप्रस्तुत अपनाया गया है । लेकिन यह तो विधात्मक बदलाव के कारण हो सकता है ।

कविता और गज़ल एकही सिक्के के दो अंग है । लेकिन उन्हें पहचानने के तरिके अलग - अलग है । जिसके लिए छंद की कसौटी का इस्तेमाल किया जाता है । दोनों के छंद अलग-अलग होते है । कवि दुष्यंतकुमार ने अन्य गज़लकारों की तरह अपनी गज़लों के लिए "उर्दू" के "शेर" छंद का प्रयोग किया है । जिसे उनके छंदात्मक विकास का चरण माना जा सकता है । पूर्ववर्ती काव्य संकलनों के लिए उन्होंने कविता के ही अलग-अलग छंदों का प्रयोग किया है ।

दुष्यंतकुमार द्वारा अपनाये गये "शेर" छंद में भी नवीनता नजर आती है । उन्होंने रदीक और काफिया समानवाले छंद, रदीक एक और काफिये भिन्न वाले छंद, तथा रदीक और काफिया दोनों में भिन्न छंद अपनाये है, जो उनकी छंदात्मक विकास में अपना योगदान प्रस्तुत करते है । इन सब के उदाहरण प्रस्तुत है --

"हो गयी है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए ।"[१]

इसमें रदीक "चाहिए" और काफिये "पिघलनी" और "निकलनी" समान ध्वनिवाले हैं ।

इससे अलग रदीक एक से किंतु काफिये भिन्न-भिन्न वाले छंद का उदाहरण दृष्टव्य है --

---

१) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ३०.

"हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए ।" [१]

दुष्यंतकुमार द्वारा लिखी गज़लों के शेर का और एक रूप दृष्टव्य है, जिसमें रदीफ और काफिये दोनों भिन्न है ।

"एक कबुतर चिठ्ठी लेकर पहली पहली बार उड़ा,
मौसम एक गुलेल लिए था, पट से नीचे आन गिरा ।" [२]

इसतरह क्लापक्ष के अध्ययन के पक्ष में भाषा को भी लिया गया है । अन्य काव्य संक्लनों की तरह इसकी भाषा भी जनभाषा से युक्त है । अभिव्यंजना कौशल्य की दृष्टि से यह संक्लन महत्वपूर्ण है । इसकी भाषा हिन्दी उर्दू, अरबी और फारसी मिश्रित है । इसमें सूत्र-शैली का प्रयोग भी किया गया है । जो कवि की भाषागत देन है । इसकी भाषा के बारे में डॉ. हरिचरण शर्मा "चिंतक" लिखते है "यदि निष्पक्ष भाव से समीक्षा की तराजू में हिन्दी गज़लों को तोला जाय तो दुष्यंतजी की गज़लों का पलड़ा ही भारी रहता है ऐसी गज़ले उनसे पूर्व कोई कह सका और शायद ही भविष्य में कोई कह सके (हालाकि उखाड़ पछाड़ में कई धूरंधर लगे हुए है)" [३] डॉ. चिंतकजी का यह अवतरण कवि दुष्यंतकुमार की कीर्ति का पैगाम ही कहलाया जा सकता है ।

अन्य कृतियों की तरह यह संक्लन भी कुछ सामाजिक, राजनीतिक तथा कुछ व्यक्तिगत विषयों को लेकर उपस्थित हुआ है । लेकिन इन विषयों की तह तक जाने का प्रयास शायर ने इस संक्लन में किया है । जो उनके काव्य विकास का एक बिंदु माना जा सकता है ।

---

१) साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ. ३०.
२) - वही - पृ. ४२.
३) दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा, "चिंतक", पृ. १०५.

व्याकरण की दृष्टि से भी यह संकलन विधा के अनुकूल कलात्मक पहलुओं को लेकर उपस्थित हुआ है । इसमें बिंब, प्रतीक, अप्रस्तुत विधान, छंद आदि का स्थान गज़ल के अनुकूल बन पड़ा है । साथ ही गज़ल के अनुकूल भाषा में भी परिवर्तन आ गया है । इसे भाषागत विकास का चरण कहलाया जा सक्ता है ।

इसतरह "साये में धूप" कृति कवि के अनेक काव्य पहलूओं को उजागर करती हुई नजर आती है । उनके काव्य-विकास में योगदान देती हुई, उन्हें कवि से शायर बनाती है ।

अंतीम कविताएँ :

कवि दुष्यंतकुमार ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले जो रचनाएँ लिखीं हैं, उन्हें हम उनकी अंतीम रचनाएँ कह सकते है । ऐसी सिर्फ तीन रचनाएँ है । जो इस प्रकार है - "अजायब घर", "तुमने देखा" तथा एक रचना शीर्षक रहित है जो "चल भई गंगाराम भजन कर" शीर्षक से जानी जाती है । अत: इन रचनाओं में कवि ने सम सामयिक पीड़ा को ही व्यक्त किया है । इन रचनाओं का मूल विषय आपातकालीन विषाक्त वातावरण रहा है । इन कविताओं में कवि ने भारतीय जनजीवन की त्रसित स्थिति और उनके साथ शासन के व्यवहार का यथार्थ चित्रण किया है ।

हर व्यक्ति के जीवन में एक समय ऐसा आता है कि, उस समय इन्सान अतीत को भूलकर एक-दूसरे की मदद करता है । वह समय है - आपातकाल । ऐसी स्थिति में भी अगर देश की सभ्यता, संस्कृति, मानवमूल्य, सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था निष्प्रभ हो जाय, तो जनता कितनी निराश हो जाती है । इसका प्रमाण देती हुई "अजायबघर" कविता की यह पंक्तियाँ -

"यह अजायब घर
इसकी मूर्दा तहजीब में सफर
जाने कब खत्म होगा ।" [१]

इनमें से आम आदमी की घुटन, बेचैनी, निराशा का बोध होता है ।

"सर्वेश्वर दयाल सक्सेना" के नाम लिखी "तुमने देखा" कविता में आपात काल में देश किस स्थिति से गुजर रहा है । उसे किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा है । इसका लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है । जो दृष्टव्य है --

"आज सारी दुनिया से पता चल रहा है,
कि एक मुल्क धू-धू करके जल रहा है ।" [२]

इसके साथ मँहगाई की समस्या का यथार्थ चित्रण भी इस कविता में दिखाई देता है -

"तुमने देखा
कि रोशनी तो क्या
घाँस भी महँगी है ।" [३]

कवि दुष्यंतकुमार की अंतिम रचना "चल भई गंगाराम भजन कर" नाम से जानी जाती है । इसमें भी देश की आपातकालीन स्थिति का ही अवलोकन किया गया है । यह रचना गीत शैली में लिखी हुई है । शासन की पाबंदियों की झलक कवि की इस कृति से मिलती है —

"मौलिक अधिकारों पर पहरा,
जलसों पर, नारों पर पहरा,

---

१) दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य-डॉ. हरिचरण शर्मा,"चिंतक",पृ.१०६.
२) - वही - पृ.१०६.
३) - वही - पृ.१०७.

सारे अखबारों पर पहरा,
खबरे आती है छन-छन कर
चल भई गंगाराम भजन कर।" [१]

अत: पूर्ववर्ती रचनाओं की अपेक्षा इन रचनाओं का विषय बदला हुआ है । इसमें देश की स्थिति तथा समस्याओं के लिए जिम्मेदार शासक का ही चित्रण हुआ है । साथ ही आपातकाल में निर्माण हुई जनता की स्थिति का भी वर्णन मिलता है । इसकारण इन कविताओं में भी विषय विकास नजर आता है । साथ ही ये कविताएँ गीत शैली तथा मुक्त छंद में लिखी गयी है । इससे ऐसा लगता है कि, कवि ने फिर पूर्ववर्ती संकलनों की शैली ओं को अपनाया है । इनकी भाषा यथार्थवादी तथा अपनी भावाभिव्यक्ति में सक्षाम है । अत: कवि दुष्यंतकुमार द्वारा लिखीं यह अंतीम रचनाएँ उनके कवि की पहचान देती है । जो जीवन के अंत तक अपने कार्य को पूरी तरह निभाता रहा । यही पहलू उनके काव्य विकास के लिए सदैव मद्द करता रहा है । अत: इस कारण कवि दुष्यंतकुमार हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक यथार्थ वादी कवि के रूप में पहचाने जाते है ।

.....

निष्कर्ष :

अपनी कच्ची उमर में दुष्यंतकुमार काव्य लेखन आरंभ करने के कारण उनका प्रारंभिक लेखन कला की दृष्टिसे साधारण रहना स्वाभाविक था । "पहली पहचान" शीर्षक उनकें काव्य संकलन के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, शीर्षक के अनुसार इसमें संकलित रचनाएँ प्रारंभिक होने के कारण हर नये कवि के तरह इस के विषय प्रेम, प्रणय तक ही सीमित रहे । इस संकलन की

---

१) दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा, "चिंतक", पृ. १०७.

रचनाओं में जीवन अनुभव की कमी की बावजूद भी भावों की तीव्रता और सच्चाई देखते ही बनती है ।

अनुभव की गहराई के स्पष्ट प्रमाण हमें उनकी दूसरी रचना "सूर्य का स्वागत" में नजर आते है । विषय की विविधता और जीवन की विभिन्न समस्याओं का चित्रण इस रचना की विशेषता रही है । "इस संकलन में प्रतीकों का किया प्रयोग देखते ही बनता है । छंद की दृष्टि से गीत और मुक्तक का प्रयोग करके दुष्यंतकुमारजी ने इस रचनामें अपने क्लात्मक विकास को रेखांकित किया है । इसमें "त्रिपदी" जैसे छंद का किया गया प्रयोग हिन्दी कविता के योगदान की साक्षा देता है ।

उनका तीसरा काव्य संकलन "आवाजों के घेरे" अस्ल में समाज की विविध समस्याओं से घिरा है । इसमें कवि ने दमित वासना का चित्रण मनोवैज्ञानिक धरातल पर किया है । काम भावना मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है इसका चित्रण कवि ने बड़े संयमिक शब्दों में कर सुझाबुझ का परिचय दिया है । इस रचना में कवि की दर्द भरी भाषा पाठकों को आकर्षित किए बिना नहीं रहती । फिर भी इस में कुछ दोष जरूर नजर आते हैं । कुछ रचनाओं में होनेवाले अधूरे संदर्भ इस बात को दशार्ते हैं कि शायद कवि अपने भावों को शब्द बध्द करने में असमर्थ रहा है । परंतु वास्तव में यह संकेत से भाव व्यक्त करने की शैली रही है, जो अधिक प्रभावी लगती है । इससे कवि की अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनो स्तरों पर पाठक साझीदारी कर सकते है । छंद और अलंकार की दृष्टि से भी यह काव्य संकलन कवि के प्रति नयी आशाएँ निर्माण करता है ।

"जनते हुए वन का वसंत" वैसे तो चौथी रचना है, पर प्रकाशन की कसौटी पर तीसरी ।इतिहास बोध, देशप्रेम और चक्रवात जैसे तीन खंडो में

विभाजित इसकी रचना है । तीन अलग अलग बिंबों स्पष्ट करते इतिहास बोध, की रचनाएँ परंपरा में परिवर्तन का आग्रह रखती है । देशप्रेम शीर्षक दूसरा खंड राजनीति से प्रेरित रहा है । "चक्रवात" शीर्षक की तरह जीवन के चक्रवात को स्पष्ट करता है । इसकी अधिकतर रचनाएँ व्यक्तिगत अनुभूतिसे युक्त है । दुष्यंतकुमार की लिखीं रचनाओं में यह एक अपवादात्मक काव्य संक्लन हैं जिसमें अपनी भूमिका स्पष्ट की है । इससे स्पष्ट होता है कि पूर्ववर्ती रचनाओं की अपेक्षा इस संक्लन की भूमिका प्रौढ़ रही है । चिंतन की गहराई अनुभव की समृध्दता और क्लात्मक प्रौढता के कारण यह संक्लन दुष्यंतकुमार के कवि को एक श्रेष्ठ स्तर का कवि सिध्द करता है ।

दुष्यंतकुमार ग़ज़लकार के रूप में भी सुविख्यात थे । उनके ग़ज़लकार की पहचान कायम करनेवाला संक्लन "साये में धूप" न सिर्फ स्वरूप गत परिवर्तन का द्योतक है अपितु इस रचना से इस कवि के अंतर्मन को समझाने में काफी मद्द मिलती है । ग़ज़ल के क्षेत्र में कवि का यह प्रथम प्रयास होने के कारण इसमें वह क्लाकृत निखार नजर नहीं आता जो इसकी पूर्व की रचना "जलते हुए वन का वसंत" में नजर आता है ।

अंतीम कविताएँ कवि की निराशा एवं पराजित मनोदशाको स्पष्ट करती हैं । जीवन से पलायन का भाव स्पष्ट है । राजनीतिक विषाद का भाव इस संक्लन की एक विशेषता रही है । विशेषकर सन् १९७५ के लगभग भारत वर्ष में जो राजनीतिक उथल पुथल हुई, आपातकालीन स्थितिका निर्माण हुआ इससे प्रभावित रचनाएँ समसामयिक संदर्भों से युक्त हैं । इससे स्पष्ट होता है कि दुष्यंतकुमार में निहित कवि समसामयिक संदर्भोंसे अपना वास्ता रखता था।

- -

व्यक्तिगत प्रेम से दुष्यंतकुमार की कविता का प्रारंभ हुआ और उनकी अंतीम रचनाएँ देशाप्रेम से जुड़ी रही । यह एकतरह से कवि का व्यक्तित्व व्यक्तिगत धरातल से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के धरातल पर विकसित होने का ही सबुत हैं । यह न सिर्फ विषय का विस्तार हैं अपितु, अपनी हर रचना में भाषा, शैली, बिंब, विधा, प्रतीक के विभिन्न प्रयोग करके उन्होंने अपने निरंतर क्ला विकास को परोक्षा रूप से रेखांकित किया है । निष्कर्ष के रूप में स्पष्ट शब्दों में कहा जा सकता है कि दुष्यंत-कुमार की काव्य साधना निरंतर विकसित और व्यापक होती रही।

.....